इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइबररी

मर्कज़ी अंजमने महेदवियह बिल्डिंग चंचलगुडा, हैदारबाद - 500 024 A.P.

अल्हम्दु लिल्लाह यह लाइब्ररी पढ़ने वालों और तहक़ीक़ करने वालों की सहूलत के लिये आगस्ट २००१ में स्थापित की गई, जिस में लग-भग २००० पुस्तकें जमा हैं। इस पुस्तकालय में इस्लामी पुस्तकों के अलावा कालेज के पाठय पुस्तकें भी रखी गई हैं। आप से अनुरोध है कि धार्मिक पुस्तकें प्रदान करें और जिनके पास पूर्वजों की पुस्तकें रखी हुवी हैं वह हमें प्रदान करें ता कि उनकी सुरक्षा होसके और पढ़ने वाले लाभ उठा सकें।

इस इदारे से नादार लोगों की मौत पर कफ़न भी फ़ी सबीलिल्लाह दिया जाता है और इस इदारे के अध्यक्ष ने इदारा हयात-व-ममात महेदवियह को एक शव - संदूक़ भी प्रदान किया है जो बीबी केन्सर हास्पिटल में रखा गया है।

अब तक इस इदारे की तरफ़ से दर्जे ज़ेल आठ किताबें शाए की जाचुकी हैं, और यह किताब उस सिलसिले की नवीं कड़ी है।

१) हकीक़ते तर्के दुन्या - ह० मौलाना सय्यद मीराँजी आबिद ख़ुंदमीर (उर्दु)
२) हकीक़ते ज़िक्र - ह० मौलाना सय्यद मीराँजी आबिद ख़ुंदमीर (उर्दु)
३) अल क़ुरआन वल महेदी - ह० मौलान अब्दुल हकीम तदबीर रहे०
४) रिसाला हज़दा आयात - ह० मियाँ अब्दुल ग़फ़ूर सजावंदी रहे० (हिन्दी)
५) ख़साइसे इमाम महेदी मौऊद अले० - ह० मियाँ अब्दुल मलिक सजावंदी रहे० (हिन्दी)
६) ख़ुलासतुल कलाम - ह० मियाँ शेख़ अलाई रहे०
७) अक़ीदा शरीफ़ा, अल-मेआर, बाज़ुल आयात - ह० बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुदमीर सज़ी० (हिन्दी)
८) ख़साइस इमाम महेदी मौऊद अले० - मियाँ अब्दुल मलिक सजावंदी रहे० (उर्दू)

आशा है कि हमारा यह प्रयास सफल रहेगा और यह पुस्तकें आप के लिये लाभदायक साबित होंगी।

मुहम्मद अब्दुल जब्बार खाँ
अध्यक्ष
Phone : 24418176

सैयद हुसेन मीराँ
प्रबंधक
Phone : 24523288

مجالس خمسہ

मजालिसे ख़म्सा

लेखक

हज़रत बन्दगी मियाँ

शेख़ मुस्तफ़ा गुजराती रहे०

इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइबररी
अंजुमने महेदवियह बिलडिंग, चंचलगुडा,
हैदराबाद - ५०० ०२४.

मजालिसे ख़म्सा

(पाँच सभाऐं)

लेखक

हज़रत बन्दगी मियाँ

शेख़ मुस्तफ़ा गुजराती रहे०

अनुवादक

श्री शेख़ चाँद साजिद

इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइबरी
अंजुमने महेदवियह बिलडिंग, चंचलगुडा,
हैदराबाद - ५०० ०२४.

प्रकाशन - ९

पुस्तक का नाम	: **मजालिसे ख़म्सा**
लेखक	: हज़रत बन्दगी मियाँ शेख़ मुस्तफ़ा गुजराती रहे०
अनुवादक	: शेख़ चाँद साजिद
पहला संसकरण	: 1430 हिज्री / 2009
आर्थिक सहयोग	: श्री सय्यद सफ़ीउल्लाह मुदस्सिर
Type Setting	: **Rheel Graphics, Hyderabad.**
	Tel. : 040 - 27661061, Cell : 09963977657
मूल्य	:
प्रकाशक	: **इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइबररी**
	मर्कज़ी अंजमने महेदवियह बिल्डिंग
	चंचलगुडा, हैदारबाद - 500 024 A.P.

For more information and literature in English, Hindi and Urdu
Please visit : **www.khalifatullahmehdi.info**

अरज़े नाशिर

तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो सारे संसार का रब है और जिसने हमारी हिदायत के लिये अपने अंतिम रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० और अपने ख़लीफ़ा हज़रत सैयत मुहम्मद महेदी मौऊद अले० को भेजा और हमें उन दोनों की तस्दीक़ की नेमत अता फ़र्माई।

अल्लाह वालौं के ख़िलाफ़ उलामाए ज़ाहिर का ज़ुल्म-व-सितम हमेशा जारी रहा, चुनांचे दुन्या को त्याग देकर शहरौं से दूर दायरा बांध कर रहने वाले महेदवी बुज़र्गौं पर भी सितम ढाया गया। अब चूंकि शाही दरबार बाक़ी न रहे इसलिये आज कल उलमाए ज़ाहिर धन का सहारा लेकर महेदवियौं के ख़िलाफ़ मुहिम जारी रखे हुवे हैं। चौदा सौ साल गुजर गये, लोग इन उलमा से महेदी के बारे में पूछ रहे हैं, लेकिन यह लोग जवाब देने से क़ासिर हैं। इमाम महेदी के बारे में इन्टरनेट पर कई वेब-सैट खुल गये हैं।

यह किताब ''मजालिसे ख़म्सा'' अकबर बादशाह के दो हुकूमत (963/1556-1014/1605) में 450 साल पहले यानि 980/1573-984/1577 के दरमियान, मुनाज़रा की अठारा मजलिसौं में से सिर्फ़ पाँच मजलिसौं की रूदाद है जो ख़ुद हज़रत बन्दगी मियाँ शेख़ मुस्तफ़ा गुजराती रहे० ने लिखी हैं। मियाँ मुस्तफ़ा रहे० को अठारा महीने तौक़ और ज़ंजीर डाल कर क़ैद में रखा गया और उनपर बेइन्तहा सितम ढाया गया था, लेकिन उन्हों ने जो सब्र-व-तहम्मुल से काम लिया और जिस दिलेरी से हर सवाल का जवाब क़ुरआन और हदीस से दिया है वह इस किताब के पन्नौं पर महफ़ूज़ है और पढ़ने और समझने के लायक़ है कि वही सवालात आज भी पूछे जा रहे हैं।

यह किताब उर्दू और अंग्रेज़ी में पहले छप चुकी है अब ज़रूरत और इफ़ादियत के पेशे नज़र इसको हिन्दी भाषा में पेश किया जा रहा है। जनाब शेख़ चाँद साजिद साहब ने इसका हिन्दी अनुवाद किया है और जनाब सय्यद सफ़ीउल्लाह मुदस्सिर साहब इब्न हज़रत सय्यद नेमतुल्लाह साहब अहले रसूलपूरा ने अपनी वालिदा मुहतरमा मरहूमा के ईसाले सवाब के लिये माली तआवुन किया है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इन दोनों को अज्रे अज़ीम अता फ़माए और मुदस्सिर साहब की वालिदा मुहतरमा को जन्नतुल फ़िरदोस में जगह अता फ़र्माए और अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़र्माए । आमीन ।

फ़क़ीर सैयद हुसेन मीराँ
प्रबंधक, इदारतुल - इल्म
महेदवियह इस्लामिक लाइब्रेरी

14 जमादीउल - ऊला 1430 हिज्री /
10 मे 2009

मियाँ शेख़ मुस्तफ़ा गुजराती रहे०

हज़रत मियाँ शेख़ मुस्तफ़ा रहे० आलिमे शरीअत, मुक़तदाए तरीक़त, अहले हाल व क़ात बुज़र्ग थे। उनके दादा मियाँ अवेस ने बड़ली (गुजरात) में हज़रत सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० की ख़िदमत में हाज़िर होकर तस्दीक की थी, और नाना शेख़ क़ुतुब जहाँ जो मियाँ अवेस के भाई थे वह और मियाँ अब्दुर-रशीद हज़रत बन्दगी मियाँ सैयद ख़ुंदमीर रज़ी० के दायरे से वाबस्ता थे। मियाँ मुस्तफ़ा रहे० बोहरा ख़ानदान में नहर वाला (पटन) गुजरात में 932 हिज़ी / 1527 ईसवी मे पैदा हुवे। उनके छः भाई थे। मियाँ अब्दुर रशीद रहे० पटन के एक बड़े आलिम थे। उनकी किताब **नक़लियात मियाँ अब्दुर रशीद** क़ौम में मश्हूर है।

मियाँ मुस्तफ़ा रहे० अल्लाह वाले और मुतवक्किल बुज़र्ग थे। उनकी दाअवत पर कई उलमा, उमरा ओर फ़ौज के अफ़सरौं ने महेदवी मज़हब क़ुबूल कर लिया था। पटन में उनके दायरे में पंदरह सौ फ़ुक़रा थे। मियाँ मुस्तफ़ा रहे० की बढ़ती हुई शेहरत की वजह से उस दौर के उलमा हसद करने लगे और बादशाह को लिखा कि मुल्क में फ़साद होने वाला है बादशाह को चाहिये कि उसकी जल्द कोई तदबीर करें। बादशाह ने जवाब दिया कि मैं ख़ुद आकर उन्हें कतल करूंगा। शाही लश्कर में मौजूद मियाँ के मुरीदौं ने यह सूचना मियाँ मुस्तफ़ा रहे० को दी और कहा कि आप पटन छोड़ कर चले जायें लेकिन मियाँ ने नहीं माना और कहा कि अगर बादशाह हुज्जत तलब करेगा तो मैं जवाब दूंगा और अगर मेरी जान लेना चाहे तो ख़ुशी से अपनी जान देने तय्यार हूँ।

उलमा मियाँ मुस्तफ़ा रहे० को क़त्ल करने के लिये बे चैन थे। अकबर ने 980/1573 में गुजरात फ़तह किया तो उलमा ने उसको भड़काया। शेख़ ताहिर बोहरा पटनी भी एक बड़ा आलिम था। उसकी क़ौम ने महेदवी मज़्हब अपना लिया था। वह भी अकबर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी पगड़ी उतार कर फेंक दी और कहा कि मुस्तफ़ा महेदवी ने हमारी पगड़ियाँ उतार दी हैं। अकबर ने उसके सर पर अपने हाथौं से दस्तार बांधी और कहा कि

आप फ़िकर न करें दीन का ग़म खाने कि लिये मैं मौजूद हूँ। इसी तरह मख़दूमुल - मुल्क मुल्ला अब्दुल्लाह सुल्तान पूरी, शेख़ अब्धुन नबी और दुसरे उलमा भी महेदवियों के सख़्त दुश्मन थे। यह वही मख़दूमुल मुल्क है जिसने इसलाम शाह सूरी के दौर में मियाँ शेख़ अलाई रहे० को शहीद करवाया था और मियाँ अब्दुल्लाह खाँ नियाज़ी रहे० को पिटवाया था।

अकबर जब पटन पहुंचा तो मियाँ मुस्तफ़ा रहे० को बुलवाया। जब मियाँ आये तो अकबर ने खड़े होकर उनको ताअज़ीम दी, और उलमा के इलज़ामात के बारे में पूछा। वहाँ मौजूद एक क़ाज़ी ने कहा कि जो लोग मियाँ मुस्तफ़ा की शिकायत करते हैं वह झूटे हैं। अकबर बोला कि मैं समझ गया उलमा आप पर हसद करते हैं। मियाँ ने यूसुफ़ अले० के भाइयों के हसद का ज़िकर किया तो बादशाह ने कहा कि मैं ने तो यह क़िस्सा सुना है लेकिन आप की ज़बान से सुन्ना चाहता हूँ। मियाँ ने सूरह यूसुफ़ा का ऐसा बयान किया कि बादशाह रोने लगा। शेख अब्दुन् नबी और क़ाज़ी याक़ूब ने जब देखा कि बादशाह मुतासिर हो रहा है तो कहा कि मियाँ को आये बहुत देर होगई है अब उनको रुकसत दीजिये। बादशाह उठा और मियाँ मुस्तफ़ा रहे० से कहा कि मेरे बाद लश्कर के लोग आपको तकलीफ़ देंगे इस लिये बेहतर होगा कि आप पटन छोड़कर किसी दूसरी जगह चले जायें, जब ज़रा फ़ुर्सत मिलेगी ती आप को बुलवा लूंगा। मियाँ पटन छोड़कर मोरबी में रहने लगे जहाँ उनके ३६० फ़क़ीर फ़ाकौं से हलाक होगये।

अकबर ने ख़ाँ आज़म मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका को गुजरात का सूबेदार बनाया और हिदायत की कि जिस वक़्त मैं तुम्हें बुलाऊ तुम मियाँ मुस्तफ़ा को अपने साथ लेकर आजाना। ख़ाँ आज़म ने मोरबी पर क़बज़ा करने के लिये अमीन संजर को भेजा और कहा कि आते समय मियाँ सुस्तफ़ा को अपने साथ लेते आना। अमीन संजर ने दायरे में आकर फ़ुक़रा को सताया और मियाँ मुस्तफ़ा रहे० को साथ लेगया, साथ में फ़ुक़रा और औरतें भी गयीं। ख़ैमे में मियाँ मुस्तफ़ा रहे० को तन्हा अन्दर लेगया और जान से मार देने की धमकी देकर कहा कि महेदी अले० का इन्कार करो। मियाँ ने कहा कि महेदी अले०

आये और गये अब कोई महेदा नहीं आयगा। ख़ैमे के बाहर अमीन संजर ने मियाँ के पिता मियाँ अब्दुर रशीद, भाइयौं और दूसरे फ़ुक़रा को शहीद कर दिया।

अमीन संजर मियाँ मुस्तफ़ा रहे० को लेकर अहमदाबाद आगया तो ख़ाँ आज़म ने उलमा को बुलाया और मजलिसे मुबाहसा गर्म हुवी। पाचँ मजालिस में से पहली दो मजलिसौं में ''हाकिम'' से मुराद ख़ाँ आज़म ही है। अकबर बादशाह ने अजमेर पहुंच कर ख़ाँ आज़म को बुलाया तो वह मियाँ मुस्तफ़ा को साथ लेकर अजमेर पहुंच गया। इस तरह मियाँ मुस्तफ़ा रहे० अठारा महीने तौक़ और ज़ंजीर के साथ क़ैद में रहे। अकबर उजमेर से फ़तेह पूर सीकरी जाते हुवे मियाँ को साथ लेगया। वहाँ पहुंच कर उलमा को बुलाया और मजलिसे मुनाज़रा मुनअक़िद किया जो कई रोज़ तक जारी रहा। फ़तेहपूर में अकबर ने शेख़ अब्दुल्लाह नियाज़ी के इबादत के हुजरे की जगह एक इबादत खाना बनवाया था जहाँ पहले तो वाज़-व-नसीहत की महफ़िलें होती थी लेकिन बाद में वह उलमा का अखाड़ा बनगया था। अकबर ने एक गाँव मियाँ की जागीर में देना चाहा लेकिन आप ने क़ुबूल नहीं किया और कहा कि मीरास महेदी के मान्ने वालौं पर हराम है। आख़िर में मियाँ मुस्तफ़ा रहे० बादशाह से रुख़सत लेकर बयाना चले गये जहाँ इमामुना महेदी अले० के उर्स के दिन यानि 19 ज़िक़ादा 984 हिज्री / 1577 को अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी से जा मिले।

क़ौमी किताबौं से मालूम होता है कि अठारा महीने में अठारा मजलिसें हुवीं लेकिन सिर्फ़ पाँच मजालिस ही मिली हैं जिन को इदारा जमीअते महेदवियह ने उर्दू अनुवाद के साथ छाप दिया है और अब उसको हिन्दी भाषा में पेश किया जा रहा है। इसके अलावा मियाँ मुस्तफ़ा रहे० की किताबौं में से जन्नतुल-विलायत, रिसाला नासिख़ - व - मन्सूख, और मकातीब भी छप चुकी हैं और एक ''मसनवी फ़ैज़े आम'' भी उन से मन्सूब है। तारीख़े उर्दू अदब की कई किताबों मे मियाँ मुस्तफ़ा गुजराती रहे० का ज़िकर मिलता है। तहक़ीक़ की सख़्त ज़रूरत है।

पहली मज्लिस

जूंकि इस ज़ईफ़ (मियाँ शेख़ मुस्तफ़ा रहे०) को ज़ंजीर और तौक़ (बेड़ी और गले का कुंडा) डालकर मजलिस (सभा) में ले गये, हाकिम और दूसरे उमरा और बाज़ उलमा हाज़िर थे। इस ज़ईफ़ ने अस्सलामु अलैकुम कहा, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और इस ज़ईफ़ को हलक़े के बीच में बिठाए। पहले हाकिम ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है? इस ज़ईफ़ ने कहा - मुस्तफ़ा। सूरत के क़िले का अमीर उस सभा में मौजूद था, उसने कहा कि मैं ने ऐसा मुस्तफ़ा सफ़ाई ना रकने वाला इसमे बिला मुसम्मा दुनिया में हरगिज़ नहीं देखा। हाकिम ने क़िले के अमीर की इस बात से कराहियत (धिन प्रकट) की और कहा अफ़सोस अफ़सोस वह तो एक मर्दे बुज़ुर्ग है उसके साथ इनसानियत से बात करनी चाहिए। पस हाकिम ने इस ज़ईफ़ से कहा हम जानते हैं कि तुम मर्दे बुज़ुर्ग (प्रतिष्ठत मनुष्य) और पेश्वा (धर्म गुरू) हो, पर्दा नशीं औरतें और गुजरात के बादशाह तुम्हारी देहलीज़ के मुलाज़िम हैं और तुम्हारा तबर्रुक और पसख़ुर्दा आगरा से गौड़ और पूरब तक जाता था और हमारी सभा में तुम्हारा ज़िकर बार-बार आथा था। अब आलिमों के कहने पर ज़रुरत के लिहाज़ से इस तरह यानि बेड़ियाँ डालकर मजलिस में लाये हैं हमारे मुतआल्लिक़ तुम्हारे दिल में क्या ख़याल है। इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि एक शख़्स एक मुर्शिद से पूछा कि फ़क़ीरी की तारीफ़ क्या है तो फ़रमाया कि मिट्टी छानी हुवी और उस पर थोड़ा सा पानी डाली हुवी, उस से पांव की पीठ पर गर्द आती है और न उस से तलवे में दर्द होता है, अहले बातिन के मज़हब की बिना पर हमारा दिल सब की तरफ़ से भरा हुवा है। इसके बाद हाकिम ने कहा कि गुजरात के मशाइख़ीन और उलमा तुम्हारी ज़ात

से बहुत अदावत रखते हैं और कई बार अर्ज़ियाँ (प्रार्थना पत्र) लिखकर हमारे पास भेजे हैं कि गुजरात के मुल्क में बड़ा फ़साद ज़ाहिर हुआ है, एक शेख़ ज़ादा बिदअतियौं का मज़्हब इख़तियार किया है और तमाम ख़लाइक़ (लोगौं) को अपने एतक़ाद की दावत करता है, पौलादियाँ, अफ़ग़ान और दूसरे लोग बल्कि बाज़ उलमा भी उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुवे है और उसका मज़्हब क़ुबूल करलिये हैं, इस लिये बादशाह पर वाजिब है कि कोई तदबीर (उपाय) करे कि यह फ़साद दूर हो। ग़र्ज़ उलमा की कोशिष से तुम इस बला में पड़े, अब तुम्हारा दिल उन से किस क़दर रंजीदा है। इस ज़ईफ़ ने कहा।

मैं अग़यार से हरगिज़ रंजीदा नहीं हूँ।

क्योंकि मेरे साथ जो कुछ किया है उस आश्ना (ख़ुदा) ने किया है।

उसके बाद महेदियत की बहस छिड़ी। हाकिम ने पूछा कि अब क्या कहते हो - महेदी मौऊद आऐंगे या आये और गये? इस ज़ईफ़ ने कहा कि महेदी मौऊद अलैहिस्सलाम आये और गये। उस वक़्त मजलिस में मौजूद मुअज़्ज़ (आदरणीय) लोगौं ने शोर-व ग़ोग़ा शुरू किया, गालियों और लान तअन से पेश आये, बल्कि उनमें से बाज़ लोग अपनी जगह से उठकर, इस ज़ईफ़ के नज़दीक आए और कहा कि इस शख़्स को क़तल करने में बड़ा सवाब है, और कलाँ ख़ाँ ने कहा कि मैं अपने हाथ से क़तल करता हूँ, अगर बादशाह रंजीदा होगा तो हम पर रंजीदा होगा बादशाह का जवाब हम देंगे कि शेख़ वाजिबुल क़तल (वध्य) था हम ने उसको क़तल किया। हाकिम ने कहा पहले तो तुम ख़ामूश रहो, हम उन से दलील पूछते हैं और हुज्जत तलब करते हैं, हम भी तो देखें कि उनका इस्तिदलाल (तर्क) क्या है, एक बार उनके मज़्हब की तहक़ीक़ करनी चाहिये, तहक़ीक़ के बाद जो कुछ मसलहत होगी किया जाएगा। इसके बाद सब ख़ामूश होगये। हाकिम ने कहा अब तफ़सील से अपना तमाम वाक़िआ बयान करो कि तुम

ने पहले किस तरह तस्दीक़ की और किस तरह जाने कि सय्यद मुहम्मद जो जोनपूर से निकले, गुजरात में दावा किये और फ़राह में दफ़न हुवे, यही महेदी मौऊद हैं। कहाँ से मालूम किये कि महेदी का मौलिद (जन्म भूमि) जोनपूर है और मबअस गुजरात है और मदफ़न (समाधि क्षेत्र) फ़राह है, हालांकि महेदी के मौलिद, मबअस और मदफ़न के मुतअल्लिक़ हदीस में मुक़र्रर है। अरब और अजम के तमाम उलमा और मदीना और हरम के अइम्मा इस अक़ीदे के फ़साद और बतलान (विकार - खडंन) के क़ाइल हैं, और तुम इल्म-व-अक़ल और मुक़तदाइ (अनुकृत होने) के बावजूद इस एतक़ाद के क़ाइल हुवे और लोगौं को इस एतक़ाद की तरफ़ बुलाते हो, चाहिये कि अपने वाक़आ का क़िस्सा पूरे तौर पर बयान करें।

इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि हमारे आबा व अजदाद (पूर्वज) दर असल अहले तसव्वुफ़ यानि मशाइख़े तरीक़त से थे। यह बात मानी हुवी है कि इस जमाअत के मज़हब में वली की बात का इनकार हराम हे बल्कि समे क़ातिल (वधक विष) के बराबर है। अहले ज़ाहिर से बहुत लोग औलिया के इनकार के वासते से ईमान और मारिफ़त की पूंजी ज़ाये (नष्ट) करलिये हैं और हलाकत और नुक़सान के जंगल की तरफ़ रूख़ किये हैं, जैसा कि सलफ़ मसलं सय्यदुत-ताइफ़ा ख़ाजा जुनेद बग़दादी, हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली और शेख़ुश - शुयूख़ शेख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैहिम की किताबौं से मालूम होता है। इासिले कलाम (सारांश) यह है कि जब हम को बतरीक़े तवातुर मालूम हुवा कि हज़रत सय्यद मुहम्मद ने अपने ज़बाने मुबारक से कई बार उलमा और मनशाइख़ीन के मजमा में यह दावा (महेदियत) ज़ाहिर फ़रमाया और आख़िर दम तक उस दावे पर मुसिर (क़ायम) रहे, और आप की विलायत के आसार तमाम आलम में फैल गये, और आप के फ़ैज़ की तासीरात बुहत मश्हूर होगयीं, यहाँ तक कि बुहत से लोग जो इल्म से

कुछ भी ख़बर नहीं रखते थे महज़ आप की सुहबत में रहने से शरीअत के उलूम की बारीकियों और ख़ुदा को पहचान्ने में इस क़दर आगाही और इस्तेदाद (पात्रता) पैदा किये कि बयान नहीं कर सकते। आमाले जमीला (मनोहर व्यवहार) और औसाफ़े जलीला (श्रेष्ट गुण) जैसे तवककुल (अल्लाह पर भरोसा), सिदक़ (सत्यता), तस्लीम, तफ़्वीज़ (अल्लाह के सामने आत्मसमर्पण करना), हिल्म (सहनशीलता), मुरव्वत (विनम्रता) और तमाम अख़लाक़े हसना (श्रेष्ठ सदव्यवहार) में इस दर्जा कमाल को पहुंचे कि लिख नहीं सकते, बल्कि उनमें का एक एक मुक़तदा (धर्मगुरू) के दर्जे को पहुंचा, और हर एक की ख़िदमत में हज़ारों तारिकाने दुनिया तालिबाने ख़ुदा शरीअत और तरीक़त के हुदूद की रिआयत के साथ सर्मस्ते हक़ीक़त पैदा हुवे। अहले तसव्वुफ़ के मज़्हब की बिना पर हमने हैज़रत महेदी अले० की तस्दीक़ (पुष्टि) की तरफ़ तवज्जुह की और हज़रत के आसतानए शरीफ़ पर सर टेक दिया। लफ़्ज़ी मजादलात (शाब्दिक युद्ध) और मबाहिसात (वाद - विवाद) जो उलसाए ज़ाहिर का तरीक़ा है उस से हमने परहेज़ किया।

मशाइख़े तरीक़त ने अपने तमाम पुस्तकौं में बयान किया है कि ऐ राहे हक़ पर चलने वाले हुश्यार रह और ख़ुद को औलिया - अल्लाह के इनकार से दूर रख ता कि तू अपने ईमान से ख़िरमन (राशी) को तबाह न करे और अल्लाह तआला के कलाम पर नज़र कर कि रिसालत के दब दबे का जलाल और नबूवत के मरतबे का कमाल रखने वाले पैग़म्बर मूसा कलीमुल्लाह अले० ने तौरेत की शरीअत के इक़्तिज़ा (इच्छा) से हज़रत ख़िज़र अले० के हज़ूर में सिर्फ़ यह अर्ज़ किया कि 'तुम एक चीज़ ना पसंद लाये', और फिर किस तरह उज़र ख़्वाही (क्षमा चाहना), शरमिन्दगी, मुहताजी और तवाज़ो (आदर) से पेश आये और आजिज़ी और मुहताजी की ज़बान से फ़रमाया कि *'(मूसा ने) कहाः जो भूल-चूक*

मुझ से हुई उस पर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में आप मुझ पर सख़्ती न की जिए) (अल-कहफ़-७३)।' मूसवी नबूवत का नूर चाहिये ताकि नूरे विलायते मुहम्मदी यानि इमाम महेदी अले० को पहचानें। बेचारे अहले ज़ाहिर (और पीराने जाहिल) क्या जानें। हासिल कलाम मशाइख़े तरीक़त का मज़्हब ज़ाहिर है। अब तुम्हारी मजलिस के उलमा को यह गुमान नहीं करना चाहिये कि हम ने जो कुछ बयान किया है सिर्फ़ उसी क़दर हज़रत सय्यद मुहम्मद अले० की महदियत के सुबूत की हुज्जत है। नहीं - नहीं हम जानते हैं कि यह तक़रीर जो हमने की उलमाए शरीअत के मजमे में हुज्जत के लाइक़ नहीं लेकिन चूंकि तुमने कहा था कि अपना क़िस्सा अव्वल से आख़र तक तफ़सील से बयान करो, इसी लिये हम ने यह तक़रीर की, इल्मी हुज्जत इसके बाद अदा होगी इन्शा-अल्लाह तआला।

जब महेदी मौऊद अलै० की तस्दीक़ मशाइख़े तरीक़त के मज़्हब की बुन्याद पर की गई तो उलमाए ज़ाहिर की जमाअत मुबाहिसा और मुजादला (शत्रुता) के मैदान में क़दम रखी और हमें गुमराह (पथभ्रष्ट) और बद-एतक़ाद ठहराया, इतना ही नहीं बल्कि हमारी जमाअते महदवियह के इख़राज और क़तल का फ़तवा दिया और चंद महेदवियों को महज़ यह कहने पर कि 'महेदी मौऊद अले० आये और गये' क़तल करवादिया। इसके बाद हम हैरान हुवे और अपने दिल में सोंचा कि क्या हमारा यह अक़ीदा नस्से क़ुरआन या हदीसे मुतवातिर या इज्माए उम्मत के ख़िलाफ़ है, अगर ऐसा है तो इमको बलिहाज़े ज़रूरत तौबा करना चाहिये और हक़ की तरफ़ रुजू करना चाहिये। अगर हमारा अक़ीदा नस्से क़ुरआन, हदीसे मुतवातिर और इज्माए उम्यत के ख़िलाफ़ नहीं है तो मुख़ालिफ़ाने महेदी की मलामत और ईज़ा (कष्ट) का कोई ख़ौफ़ नहीं। जिसने नेक अमल किया तो वह अपने भले के लिये और जिस ने बद-कारी की तो

वबाल भी उसी पर। इस लिये हम पर लाज़िम नही कि महज़ उलामाए ज़ाहिर के कहने पर हज़रत सय्यह मुहम्मद महेदी अले० को झुटलाऐं। कुरआने मजीद में यूसुफ़ अले० के क़िस्से में है कि *"जब उसके भाइयों ने आपस में कहा कि मुसूफ़ और उसका भाई हमारे बाप को इमसे ज़्यादा महबूब है। हालांकि हम एक पूरा जत्था हैं। यक़ीनन हमारा बाप एक खुली हुई ग़लती में मुब्तिला है। यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या उसे किसी जगह फेंक दो''* (यूसुफ़ - ८,९)। इसी तरह आदम सफ़ीउल्लाह अले० के बारे में मलाइका की जमाअत ने कहा *''क्या तू ज़मीन में ऐसे शख़्स को नाएब बनाता है जो उसमें फ़साद फैलाएगा और ख़ुन बहाएगा''* (अल-बक़रह - ३०)।

हम यूसुफ़ अले० के भाइयों की जमाअत और फ़िरिश्तों की जमाअत की बातौं को मोअतबर (विश्वस्त) और मक़बूल (मान्य) नहीं समझते तो हमारे ज़माने के उलमाए ज़ाहिर जो इन दोनों जमाअतों से बढ़कर मर्तबा नहीं रखते, महज़ उनकी अंधी तक़लीद की बिना पर साहबे विलायत यानि महेदी अले० के दाअवे को किस तरह रद करें। हम ने इसकी तहक़ीक़ के लिये सलफ़ (पूर्वज) की किताबौं को देखा तो अहादीस की किताबौं में महेदी अले० के ज़िकर को पाया और देखा कि उलमाए सलफ़ ने महेदी अलैहिस्सलाम की आमद को मुतवातिरुल माना क़रार दिया है, लेकिन अलामात के मुतअल्लिक़ कोई मुज्तहिद और मुफ़स्सिर ने क़तअ व यक़ीन के तौर पर (निश्चित रूप से) कुछ भी नहीं कहा, इस लिये कि वह अहादीस जो अलामात पर दलालत करती हैं ज़ाहिर और अज़्हर हैं कि वह सब अहाद हैं। ख़बरे वाहिद अपने तमाम शराइत रखने के बावजूद सिर्फ़ ज़न (अनुमान) का फ़ाइदा देती है और ज़न् एतक़ादात में मोतबर (विश्वासनीय) नहीं इसके अलावा अहाद होने के बावजूद मज़कूरा अहादीस में तआरूज़ और तनाक़ुज़ (विरोध और भिन्नता) बहुत

है। जैसा कि बाज़ अहादीस से महेदी और ईसा अलैहिमस्सलाम का एक समय में जमा होना मालूम होता है और बाज़ अहादीस से जमा न होना मालूम होता है। इस तरह बाज़ अहादीस से मालूम होता है कि महेदी के ज़माने में दज्जाल निकलेगा और बाज़ अहादीस से मालूम होता है कि महेदी अले० के विसाल के बाद दज्जाल निकलेगा। इसी तरह महेदी अले० के मौलिद (जन्म स्थान), मब्अस (बेसत की जगह), मदफ़न और ज़ाहिर होने की तारीख़ के बारे में बहुत इख़तिलाफ़ है, इसी लिये इस बारे में उलमाए सलफ़ (पूर्वज विद्यावानों) ने अपनी कसरते दियानत (अधिक ईमानदारी) की वजह से तवक़्क़ुफ़ किया और अलामात के इल्म को अल्लाह के हवाले किया, और इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि महेदी अले० इमामे आदिल है, फ़ातिमा बिंत रसूलुल्लाह सल्ला० की औलाद से हैं, अल्लाह उनको जब चाहेगा पैदा करेगा और उनको अपने दीन की नुसरत के लिये मबऊस (नियुक्त) केरगा। एक - दूसरे से टकराने वाली अहादीस के मज़मून से शुब्हात (संदेह) पैदा होते हैं।

बादशाह की मजलिस में भी बादशाह के लश्कर के उलमा और शहर नहरवाला के उलमा ने बहुत कोशिष की मगर हज़रत सय्यद मुहम्मद की महदियत के इमकान (सम्भावना) की नफ़ी और एहतमाल को दूर नहीं करसके, और इस मजलिस में बहस इस माने पर क़रार पाई कि मुम्किन और मुपतमिल है कि हज़रत सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० होंगे और आप की तस्दीक़ करने वाला लाइक़े ताअन (पटकार योग्य) न होगा, लेकिन इमकान की दलील और एहतेमाल की हुज्जत की बिना पर तुमको नहीं चाहिये कि दूसरों को (अपने मज़हब की) दावत दें, इस लिये कि मुहतमल (संभव) हुज्जते क़तईया (निर्णायक सबूत) के लायक़ नहीं। अहादीस की किताबौं की ततब्बो (अनुसरण) से ज़ाहिर हुवा कि हज़रत सय्यद मुहम्मद अले० के मुसद्दिक़ (पुष्टि करने वाले) पर

कोई ऐब और तअन लाज़िम नहीं आता, कुफ़्र, ज़लालत (गुमराही) और बिदअत की निसबत मुसद्दिकों के लाइक़ नहीं और इस जमाअते महदवियह पर क़त्ल का फ़त्वा देना महज़ जोर व ज़ुल्म है। अल्लाह रहम करे उस पर जिस ने इन्साफ़ किया।

उसके बाद अलमा ने सवाल किया कि तुम्हारी तक़रीर के मज़मून से मालूम हुवा कि उलमाए सलफ़ इस बात पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं कि महेदी अले० इमाम होंगे, लेकिन यह शख़्स जिसको तुम महेदा कहते हो इमाम न हुवा, पर तुम अपनी ज़बान से मुलज़िम हुवे। इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि महेदी अले० की इमामत के लिये लाज़िम है कि पैग़म्बरों की इमामत की मुशाबिहत (समानता) रखे न कि ज़माने के बादशाहों की इमामत की मुशाबहत रखे, क्योंकि तमाम पैग़म्बर इमाम थे, और पैग़म्बरों की इमामत के लिये मुल्क का क़ब्ज़ा और अम्वाल का तसर्रुफ़ (धन पर अधिकार) शर्त नहीं है। अल्लाह तआला पैग़म्बरों के बारे में फ़र्माता है: *''और उनमें से हमने इमाम बनाए जो हमारे हुक्म से हिदायत करते थे, जब वह सब्र करते थे और हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे''* (अससज्दह-२४)। चंद सौ पैग़म्बरों ने कामिल ग़ुर्बत और ख़ूबी-ए-क़ुदरत की हालत में मुन्किरों के हाथ से शहादत का शर्बत चखा है। उनके लिये मुल्क पर क़ब्ज़ा, फ़ौज की कसरत और अम्वाल का तसर्रुफ़ कहाँ था। इस माना (अर्थ) की बिना पर मुक़र्रर और मुतहक़्क़िक़ (निर्धारित) हुवा कि हज़रत सय्यद मुहम्मद महेदा मौऊद अले० इमाम थे और आयते करीमा *''हिदायत करते थे हमारे हुक्म से''* के मताबिक़ लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाए हैं। हासिल यह कि अहादीस की किताबों से ज़ाहिर हुवा कि हज़रत सय्यद मुहम्मद अले० इमाम थे।

इसके बाद उलमा न सवाल किया कि महेदी अले० के बारे में पैग़म्बर सल्ला० ने फ़र्माया है कि (महेदा अले०) ज़मीन को क़िस्त व

अदल (न्याय) से भरदेंगे जैसा कि ज़मीन जौर व ज़ुल्म से भरी गई थी। तुम इस हदीस को सहीह समझते हो या मौज़ूअ समझते हो? इस ज़ईफ़ ने कहा कि हम सहीह समझते हैं। हाकिम ने कहा कि इस हदीस की तत्बीक़ (अनुकूलता) तुम्हारे मुद्दआ (उद्देश्य) से कैसे होसकती है। इस ज़ईफ़ ने कहा हक़ सुब्हानहु व तआला पैग़म्बर हज़रत शुऐब अले० के क़िस्से में फ़र्माता है: *''और ज़मीन में फ़साद न करो उसकी इस्लाह के बाद''* (अल-आराफ़-५६)। इस आयत में ज़मीन से मुराद मदयन की ज़मीन है क्योंकि हज़रत शुऐब अले० मदयन की ज़मीन पर रहने वालों पर मब्ऊस हुवे, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है: *''और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा''* (अल-आरफ़-८५)। उम्मत के मुफ़स्सिरों की इज्माअ से यह बात निश्चित है कि शहर मदयन में चार लाख सवार थे लेकिन हज़रत सुऐब अले० की दो लड़कियों के सिवाय किसी शख़्स ने हज़रत शुऐब अले० की तस्दीक़ नहीं की और फ़र्मांबरदार न हुवे। इसके बावजूद अल्लाह तआला फ़र्माता है *''ज़मीन में फ़साद न करो उसकी इस्लाह के बाद''* यानि तबाही मत करो ऐ शुऐब अले० की उम्मत मदयन् की ज़मीन में उस ज़मीन की इस्लाह होने के बाद। यहाँ ग़ौर करना चाहिये कि मदयन के रहने वालों में से किसी ने हज़रत शुऐब अले० की तस्दीक़ नहीं की और फ़साद से बाज़ न रहे तो फिर फ़र्माने ख़ुदा *''ज़मीन की इस्लाह के बाद''* कया माना रखता है। पस मालूम हुवा कि इस इस्लाह से मुराद हज़रत शुऐब अले० की दाअवते सलाह (नेकी के तरफ़ बुलाना) है। कोई शख़्स इताअत करे या न करे, कलामे रब्बानी के हुक्म से कह सकते हैं कि हज़रत शुऐब अले० मदयन की ज़मीन को सलाह की तरफ़ लाये। चुनांचे बाज़ मुफ़स्सिरों ने आयत *''ज़मीन में फ़साद न करो''* के तहत लिखा है कि अपनी ज़ात से नेक काम किया और दूसरों को नेकी की तरफ़ बुलाया। पस इस माना के लिहाज़ से जैसा कि हज़रत शुऐब

अले० ने मदयन की ज़मीन को सलाह से आरासता किया, उसी तरह हज़रत महेदी अले० ने तमाम ज़मीन को अदल से आरासता किया बल्कि हज़रत महेदी अले० के हुज़ूर में बहुत से लोगों ने आप की तस्दीक़ और इताअत क़ुबूल करके अपनी जान और माल को निसार कर दिया और ख़ुद को मलामत के तीर का निशाना बना दिया।

उलमा ने कहा इस वजह पर भी तुम्हारी हुज्जत दुरुस्त नहीं, इस लिये कि तुम ने सिर्फ़ एक शहर पटन में यह शोर व ग़ोग़ा उठाया है और बाक़ी किसी शहर और विलायत (राष्ट्र) में यह ख़बर मश्हूर नहीं, इस लिये तुम्हारी यह हुज्जत कि महेदी अले० ने तमाम ज़मीन को क़िस्त व अदल से भर दिया जैसा कि शुऐब अले० ने मदयन की तमाम ज़मीन की इस्लाह की दुरुस्त नहीं, तुम अपनी तक़रीर से ख़ुद मुलज़िम हुए। इस ज़ईफ़ ने कहा कि तुम्हारे कलाम में तआरुज़ (प्रतिकूलता) है, इस लिये कि अभी तुम कहते थे कि सलीम शाह के वक़्त जब शेख़ अलाई रहे० को क़त्ल के लिये हैज़िर किये तो शेख़ अपने अक़ीदे से नहीं पलटे बल्कि उनके बाज़ ताबईन (अनुयायी) ने इस अक़ीदे से तौबा की। किसी ने शेख़ अलाई रहे० से सवाल किया कि यह क्या है कि तुम ने तो तौबा नहीं की और यह लोग तायब हो गये। शेख़ अलाई रहे० ने जवाब दिया कि पेश्वा के लिये आलियत (उत्तमता) इख़तियार करना ज़ियादा बेहतर है, अगर मुक़तदी (अनुयायी) ने रुख़सत की तरफ़ तवज्जह की तो ऐब नहीं। ग़र्ज़ तुम को मालूम है कि मियाँ शेख़ अलाई की तरह कोई शख़्स इल्म, तक़वा, रियाज़त और ज़ुहद में उस शहर में उन से ज़ियादा मश्हूर नहीं था। मियाँ शेख़ अलाई रहे० ने हज़रत महेदी अले० के आसताने को अपना क़िबला बनाया और अपनी पाक जान को उस आसतानए शरीफ़ की मुहब्बत में निसार कर दिया। यह ख़बर आलम में फैल गई है कि एक आलिम शर्अ का पाबदं, परहेज़गार, पीरे तरीक़त, उस्तादे शरीअत ने यह ख़बर दी है

कि महेदी मौऊद अले० आये और गये, और मियाँ अलाई ने बादशाहों, पर्दा नशीं औरतों, आलिमों और मशाइख़ों के साथ सुबूते महेदियत में दलाइल व बराहीन के साथ मुक़ाबला किया है। अरब और अजम में कोई शख़्स ऐसा न होगा जो यह कहता हो कि मैं ने यह ख़बर नहीं सुनी। अब तुम कहते हो कि शहर पटन के सिवाय कहीं यह ख़बर नहीं पहुंची, और अभी तुम कह रहे थे कि इस शहर के उलमा ने इस फित्ने से आजिज़ आकर मक्का के उलमा से फ़र्याद की, और मक्के के उलमा ने महज़रा करके जमाअते महेदवियह पर (उनके क़त्ल का) फ़त्वा लिखा। यह फ़त्वा गुजरात में आकर तीस साल का अर्सा हुआ है। अरब के उलमा को मालूम होचुका है कि रूऐ ज़मीन पर महदवियों का बड़ा गुरोह पौदा होगया है जो अजम के उलमा को हैरान कर दिया है और मख़लूक़ गुरोहे महेदवियह के क़ौल की तक़लीद करती है (यह मान लेती है कि महेदी मौऊद अले० आये और गये)। यह ख़बर मक्का और मदीना में, अल्लाह तआला इन दोनों मक़ामात को आफ़ात और बलय्यात से महफूज़ रखे, मश्हूर हो गई हौ और फिर तुम कहते हो कि हम ने सुना है कि पटन में किसी ने महदीयत का दावा किया है, उस से बढ़कर हम ने नहीं सुना, और अभी तुम हमको कहते थे कि तुम्हारी गुमराही की नहूसत गौड़ और पूरब को पहुंच गई हौ और वहाँ हज़ारों अश्ख़ास हैं जो तुम्हारी बात की तक़लीद करके (महेदी मौऊद अले० आये और गये कहकर) इस फ़ित्ने में पड़े हुवे हैं और इस अक़ीदे को क़ुबूल करलिये हैं। बदख़शाँ में भी तुम्हारा फ़ित्ना पहुंच गया है और तुम्हारे अहबाब में से एक बदख़शानी क़त्ल किया गया है। अहले शीराज़ तुम्हारी तक़लीद से फ़ित्ने में पड़े हुवे हैं और मुल्ला अलाउद्दीन शीराज़ से आकर तुम्हारी सुहबत में रह गये हैं। हर्यू, फ़राह और क़ंधार में जमाअते महदवियह मौजूद है। दीगर यह कि शेख़ अब्दुन नबी सदरुस - सुदूर और क़ाज़ी याक़ूब मलिकुल - क़ज़ात ने बादशाह की

मजलिस में बादशाह और आलिमों के हुज़ूर में इस ज़ईफ़ को कहा कि अकबर बादशाह तुम्हारे तदारूक (रोक थाम) के लिये गुजरात आया है। गुजरात के बादशाह का लश्कर ऐसा क़वी न ता कि ख़ुद अकबर बादशाह को आने की ज़रुरत होती। गुजरात पर क़ब्ज़ा करने के लिये अकबर बादशाह का एक नौकर काफ़ी था, लेकिन तुम्हारे शोर और फ़ित्ने के सबब् से अकबर बादशाह बज़ाते ख़ुद गुजरात तश्रीफ़ लाये हैं। यह ज़ईफ़ दर हक़ीक़त इस गुरोहे महेदवियह में एक धास की काड़ी की हैसियत रखता है। ऐसे शख़्स को दफ़अ करने के लिये अकबर बादशाह को बज़ाते ख़ुद आने की ज़रुरत हुई, तो अब इन्साफ़ करो कि ऐसा किस तरह कह सकते हैं कि यह ख़बर यानि मुद्दआए महेदियत की ख़बर शहर पटन के सिवाय हम ने किसी जगह नहीं सुनी, जबकि तमाम आलम में मश्हूर होगया है कि महेदवियौं का बड़ा गुरोह ज़ाहिर होगया है और ख़ल्क़ को बिदअत तर्क करने, सुन्नते रसूल सल्ला० की पैरवी करने, क़ुरआने शरीफ़ की मुवाफ़क़त करने, अवामिरे शरईया की अदाई और मम्नूआते शरईया से परहेज़ करने की दावत देता है, और मआमलात और इबादात में हिम्मत का क़दम आलियत की बुलंदी पर रखता है। तक़वा, तवक्कुल, सिदक़ दियानत, गोश नशीनी, तन्हाई, फ़क़र - व - फ़ाक़ा इख़तियार करने, ख़ुदा की राह में माल देने में उसतुवार और कामिल मज़्बूती रखता है, और इस अक़ीदे पर मुसिर और मुस्तहकम है बल्कि रात दिन आहिस्ता और अलानिया यह गीत गाता है कि बेशक महेदी मौऊद अले० आये और गये। बुज़रगौं को चाहिये कि ऐसी फ़ज़ूल बातें न करें कि जमाअते महेदवियह के मुद्दआ की ख़बर शहर पटन के सिवाय किसी जगह नहीं पहुंची।

इस मौक़े पर हाकिम ने कहा *लकुम दीनुकुम व लीय दीन* (तुम को तुम्हारा दीन और मुझको मेरा दीन) कहने के सिवाय कोई दूसरी तदबीर

नहीं, क्योंकि इन को (मियाँ शेख़ मुस्तफ़ा रहे० को) उनकी तक़रीर पर इलज़ाम देना मुम्किन नहीं है, लेकिन यह क्या बात है कि मुफ़स्सिरौं ने *लकुम दीनुकुम* की आयत को मन्सूख़ रखा है। इस ज़ईफ़ ने कहा कि बाज़ मुफ़स्सिरों ने ग़ैर मन्सूख़ कहा है। हाकिम ने कहा कौन से मुफ़स्सिर ने ग़ैर मन्सूख़ कहा है। इस ज़ईफ़ ने कहा क़ाज़ी बैज़ावी ने कहा है। इस के बाद अकाबिराने मजलिस ने हाकिम से इल्तिमास किया और कहा कि ऐ मिर्ज़ा शेख़ महेदवी से मुबाहसा करने की ज़रूरत नहीं, इसकी बात पर तवज्जुह नहीं करनी चाहिये कि वह ज़माने का फ़ितना है। हम अहले इल्म बादशाह के साथ बैठने वाले हैं, अगर शेख़ की बात कुछ तवज्जह से सुनते हैं तो दिल में आता है कि शेख़ हक़ पर है, इसकी बात हमारे दिल पर असर करती है, ऐसे फ़ितने को नहीं छोड़ना चाहिये। अहले मक्का का फ़त्वा हमारे लिये काफ़ी हुज्जत है क्योंकि अहले मक्का आलम में अफ़ज़ल हैं, उनका फ़त्वा नाहक़ न होगा, उस फ़त्वे के हुक्म से शेख़ को क़त्ल करना चाहिये। हाकिम ने इस ज़ईफ़ से पूछा कया तुम मक्का गये थे ? इस ज़ईफ़ ने कहा नहीं, फिर पूछा क्या मक्के के उलमा गुजरात आये हैं ? इस ज़ईफ़ ने कहा नहीं आये। हाकिम ने कहा यह कैसे लोग हैं आये बग़ैर और मुबाहसा और फ़हमाइश किये बग़ैर महेदवियौं के मुद्दआ (महेदी मौऊद अले० आये और गये) के बारे में महज़ उनके दुश्मनौं के कहने पर उनके क़त्ल का फ़त्वा लिख दिये, यह काम ख़ुदा परस्त आलिमौं का नहीं है। इसके बाद अकाबिराने मजलिस ने कहा ऐ मिर्ज़ा उलमाऐ मक्का के इल्म की निसबत हम जाहिल हैं, उनके क़ौल को रद्द करना और ऐतराज़ करना हमारे लिये सज़ावार नहीं, उनके क़ौल की तक़लीद करनी चाहिये और उस पर अमल करना चाहिये।

इसके बाद हाकिम ने मुल्ला ज़ादा की तरफ़ तवज्जुह की और कहा ऐ मुल्ला ज़ादे वह क़िस्सा क्या था कि तुम्हारे बाप मक्का मुबारक को गये

थे और अरसए दराज़ तक वहाँ दर्स देने में मश्ग़ूल थे, और वहाँ के लोगौं में उस्तादी और पेश्वाई में मश्हूर हो गये। उसके बाद मक्का के उलमा ने उन पर फ़त्वा दिया कि यह शख़्स राफ़ज़ी और दीन का दुश्मन है और वाजिबुल - क़त्ल है। अब तुम क्या कहते हो कि मक्का के उलमा का फ़त्वा बरहक़ (सत्य) था और तुम्हारे पिता वाजिबुल - क़त्ल थे या मक्का के उलमा ने तुम्हारे वालिद की शुहरत की वज्ह से उन से इसद करके नाहक़ फ़त्वा दिया। इसके बाद मुल्ला ज़ादा ने कहा अगर साहब बिदअतियौं (महदवियों) के सामने उलमाए दीन को शरमिन्दा करेंगे तो कौन उलमाऐ दीन मदद् करेगा। हाकिम ने कहा इल्मी बहस में क्या नामाक़ूल बात कहते हो इल्मी जवाब देना चाहिये। अब तुम अपने वालिद के मोअतक़िद हो और अपने कालिद को अहले सुन्नत व जमाअत के मज़्हब में जानते हो नके राफ़ज़ी समझते हो, पस इस माना के लिहाज़ से उलमाऐ मक्का तुम्हारे वालिद के साथ हसद किये होंगे। जब मक्का के उलमा तुम्हारे वालिद के साथ हसद किये तो तुमको किस दलील से मालूम हुवा कि जमाअते महदवियह के सात हसद नहीं किये, तुम मेरे इस सवाल का जवाब दो। मुल्ला ज़ादा ख़ामूश हो गया।

जब उलमा इस बहस में मुलज़िम हुवे तो उन्हों ने दूसरा पहलू इख़तियार किया और कहा ऐ मिर्ज़ा शेख़ से पूछो कि पैग़म्बर सल्ला० ने फ़र्माया है कि हक़ ग़ालिब है बातिल पर, लेकिन यह क्या बात है कि जमाअते महदवियह जहाँ कहीं रहती है मुफ़सिली और ज़िल्लत में रहती है और हम लोग हमेशा उनपर ग़ालिब रहते हैं। अगर महदवी हक़ पर होते तो उनकी हालत ऐसी बुरी क्यों रहती। हाकिम ने कहा हमारी तरफ़ से यह सवाल शेख़ से करने की ज़रुरत नहीं। इस सवाल का जवाब जो कुछ शेख़ के दिल में है मैं तुम से कहता हूँ कि हक़ ग़ालिब है बातिल पर जैसा कि यह शेख़ हम पर ग़ालिब है। देखो कि हम पचास साठ अश्ख़ास

हैं जो सवालात करने में शेख़ से चिमटे हुवे हैं, और शेख़ अपनी इस ग़ुरबत, मुफ़लिसी, बेड़ी, बाप और भाई की मुसीबत, अज़ीज़ौं और दोस्तौं की जुदाई के बावजूद हमारी मजलिस में ऐसे बैठे हुवे हैं गोया कि हम सब का सरदार बैठा हुआ है और हमारे हर सवाल का जवाब हश्मत, विक़ार, दिलेरी और इस्तिक़लाल के साथ जो दे रहे हैं, हक का ग़ल्बा बातिल पर यह है। उलमा ने कहा तुम्हारी यह तावील राहे सवाब से दूर है (दुरुस्त नहीं है) ग़लबए ज़ाहिरी चाहिये। हाकिम ने कहा तुम्हारी यह बात ना माक़ूल है।

इस तक़रीर के बाद वाली ने इस ज़ईफ़ से कहा कि तुमने अहादीस के मज़्मून से इमकान (संभावना) और ऐहतिमाल (संदेह) साबित किया है, यानि मुम्किन और मुहतमल है कि तुम्हारा मुद्दआ दुरुस्त हो। पस मालूम हुआ कि इस अक़ीदे के वास्ते से तुम पर क़त्ल और इख़राज लाज़िम नहीं आता। अगर तुम इस अक़ीदे पर क़ायम रहकर अपने ख़याल में मश्ग़ुल होते और ख़ल्क़ को इस अक़ीदे की दावत न करते तो तुमको यह तकलीफ़ न पहुंचती। दलीले इमकानी, हुज्जते ऐहतमाली और बुरहाने ज़न्नी से इस क़दर बाज़ार गरम करना और ख़ल्क़ को फ़रेब देना और क़तई हुक्म करना कि महेदी मौऊद अले० इसके बाद हरगिज़ नहीं आयेंगे, इस एहतमाल के मुख़ालिफ़ अहादीस के झूटे होने का यक़ीन करना और तमाम उलमा को गुमराह जान्ना महज़ गुमराही और बेराही है। तुम अपने ग़ुरुर और नादानी से तकलीफ़ में पड़े है। अब तुमको चाहिये कि तौबा करें और इस तरह कहें कि हमारा पीर वली-ए-कामिल था, उसने अपनी ज़ात से दाअवा किया है और हदीस की रु से मुम्किन और मुहतमल है कि उसका दाअवा दुरूस्त हो और हम उसके सिलसिले में है। पर हमको नहीं चाहिये और हमारे लायक़ नहीं कि हम अपने पीर की बात से जो शरीअत में मुम्किन और मुहतमल है इन्कार करें। बिल फ़र्ज़ अगर

महेदी अले० जैसा कि उलमा अहादीसे सहीहा से कहते हैं आयेगा तो हम क़ुबूल करलेंगे और जानेंगे कि हमारे पीर को कश्फ़ में ग़लती हुई थी, और अगर इसके बाद नहीं आयेगा तो ज़ाहिर हो जायगा कि महेदी मौऊद अले० यही ज़ात थी (जो आकर गई)। या तो तुम इस तरह इक़रार करो या दलीले क़तई पेश करो। इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि तुमने पहले कहा था कि अपना क़िस्सा अव्वल से आख़िर तक बयान करो, इस लिये हमने अर्बाबे तसव्वुफ़ और अस्हाबे हदीस की हुज्जत को दरमिंया में लाया वगर न हम जानते हैं कि अहादीसे अहाद ख़ुसूसं जबकि एक दूसरे के मुतआरिज़ हो तो जब दो हदीसे मुतआरिज़ हों ती दोनों साक़ित (ख़त्म) हो जाती हैं के हुक्म से ऐतक़ादात की बहस में हुज्जत के लायक़ नहीं। इन दलाइल से भी उलमा की मजलिस में ज़ाहिर होगया कि गुरोहे महदवियह मुख़ती *क़रार दिये जायें तो भी उनपर इख़राज और क़त्ल लाज़िम नहीं आता, तो फिर किस तरह उनपर क़त्ल और इख़राज लाज़िम आयगा जब कि वह सवाब पर (सही) हों। पस जो शख़्स महदवियों पर क़त्ल और इख़राज का हुक्म करता है और उस हुक्म को हलाल जानता है तो शरअं यह हुक्म उसी पर लौदता है इनशा अल्लाहु तआला इसके बाद हम दलीले क़तई पेश करेंगे। हाकिम ने कहा बेहतर है कहिये।

इस ज़ईफ़ ने कहा कि उलमाए सलफ़ ने शख़्से इन्सानी की नबूवत को साबित करने के लिये उक़ाइद की किताबों में जिन अख़लाक़ को शर्त ठहराया है और तफ़सील से बयान करके इज्माअ और इत्तफ़ाक़ से मुक़र्रर किया है कि यह अख़लाक़ रखने वाले से हरगिज़ झूट वाक़े न होगा, जैसा कि शर्ह अक़ाइद, तवाले, शर्ह मवाक़िफ़, तफ़सीरे मदारिक और अहयाउल उलूम और दूसरे कुतुबे अक़ाइद से मालूम होता है। पस

*मुख़ती वह शख़्स है जो इरादा नेकी का करे और अचानक और बे इरादा उस से ख़ता सरज़द हो जाये और ख़ाती वह शख़्स है जो क़सदन् अपने इरादे से ख़ता करे। (लुग़ाते किशेवरी)

वह अख़लाक़ (जो नबूवत के लिये शर्त किये गये) सब के सब हम ने हज़रत सय्यद मुहम्मद अले० की ज़ाते मुबारक में पाये और दाअवए महदियत आप की ज़ात से वुकूअ में आया। पस अलमाए सलफ़ के मज़्हब और फुक़हाए ख़लफ़ के मन्हज् (मार्ग) की बिना पर हमने तहक़ीक़ और यक़ीन से जान लिया कि यही जात महेदी मौऊद अले० है, इसमें कोई शक व शुब्ह नहीं। हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० ने हज़रत महेदी मौऊद अले० के बारे में फ़र्माया है कि *महेदी मेरे क़दक-बक़दम चलेगा और ख़ता नहीं करेगा।* यह फ़र्मान हज़रत महेदी अले० की ज़ात सितूदा सिफ़ात के हक़ में सादिक़ आया, यानि आँहज़रत सल्ला० के तमाम अख़लाक़, तमाम अफ़आल और तमाम अहवाल की पूरी पूरी पैरवी बग़ैर किसी कमी और बेशी के महेदी अले० की ज़ाते सितूदा सिफ़ात (प्रशंसनीय गुण वाली ज़ात) में ज़ाहिर हुवे। पस मुक़र्रर, मुहक़्क़क़, मालूम और मुतयक़्क़न हुआ कि यही ज़ात यक़ीनन् महेदी मौऊद है कोई दूसरा नहीं। हदीस का वह एहतमाल जो महेदी अले० के ज़हूर से पहले ज़न् (अनुमान) का सबब् था महेदी के ज़हूर के बाद यक़ीन के मरतबे को पहुंच गया, इस लिये कि वलीए कामिल के हाल से कि उसको सलफ़ और ख़लफ़ (अगले और पिछले) के इज्माअ और इत्तफ़ाक़ से सादिक़ुल - कौल (सच कहने वाला) जान्ना चाहिये मुवाफ़िक़ आया।

इसके बाद हाकिम ने सवाल किया कि तुमने तो उस ज़ात को नहीं देखा, फिर कैसे जाने कि उस ज़ात में यह अख़लाक़ मौजूद थे। इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया जैसा कि उलमाए सलफ़ ने अपनी लिखी हुई अक़ाइद की किताबों में पैग़म्बर सल्ला० के अख़लाक़ की तहक़ीक़ की है, उसी तरह हम ने भी महेदी अले० की ज़ात की तहक़ीक़ की और जान लिया कि यही ज़ात महेदी मौऊद है। उसके बाद हाकिम ने सवाल किया कि तुम्हारी तक़रीर के मज़्मून से मालूम हुवा कि यह अख़लाक़ रखने वाला वाजिबुत्-

तस्दीक़ है। अगर कोई शख़्स उसके बाद पैदा होजाये और यही सारे अख़लाक़ रखता हो और महेदियत का दाअवा करे तो तुम उसको क्या कहते हो? इस ज़ईफ़ ने कहा हरगिज़ पैदा नहीं होगा और दाअवा नहीं करेगा। हाकिम ने कहा मुहाल (असंभव) को फ़र्ज़ (कल्पना) करलेना मुहाल नहीं। बिल-फ़र्ज़ (मान लो कि) अगर कोई पैदा हो जाये (तो क्या कहोगे)। इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि अगर कोई शख़्स इन अख़लाक़ के साथ नबूवत का दाअवा करे तो हम और तुम उसके मुतअल्लिक़ क्या कहेंगे। उसके मुतअल्लिक़ जो कुछ कहेंगे इसके मुतअल्लिक़ भी वही कहेंगे, लेकिन ऐसा वाक़े नहीं होगा। ख़ातिमुल-अम्बिया भी आये और गये और ख़ातिमुल-औलिया भी आये और गये।

यहाँ से गुफ़तगू का रंग बदल गया। महेदियत की बहस से हटकर ग़ैर मुतअल्लिक़ सवाल जवाब होने लगे। जैसा कि सवाल किया कि ना बालिग़ को सहाबी कह सकते हैं या नहीं? जो शख़्स उली रज़ी० को अबू बक्र रज़ी० पर फ़ज़ीलत देता है उस पर क्या हुक्म करते हो? हज़रत अली रज़ी० और मुआवियह रज़ी० के मुजादला (लड़ाई) के बारे में तुम क्या एतक़ाद रखते हो? यज़ीद पर लाअनत भेजने के बारे में क्या कहते हो? तुम्हारे पास मुज्तहिद के लिये क्या शराइत हैं? कलिमाते शेर के बाज़ मुशकिलात और उनके जैसे दूसरे सवालात पेश किये। इस ज़ईफ़ ने अपने हौसला और दानिश के मुवाफ़िक़ उनके हर सवाल का जवाब दिया। हाकिम और उसके अकाबिराने मज्लिस ने मेरे किसी जवाब से इख़तिलाफ़ नहीं किया, बल्कि ख़ुशनोदी और पसंदीदगी का इज़्हार किया। उन सवाल व ज़वाब की तफ़सील ख़ारिज अज़ बहस है। यहाँ इबारत की तवालत के ख़ौफ़ से नहीं लिखी गई। ग़र्ज़ मग़रिब के बाद से आधी रात तक मजलिस हुई, उसके बाद बरख़ास्त हुई मुझे निगहबान के हवाले किया गया।

दूसरी मजलिस

इस ज़ईफ़ को इस हाल में कि पाँव में बेड़ी पड़ी हुवी थी मजलिस में ले गये। हाकिम और दूसरे उलमा और बाज़ उमरा जो पहली मजलिस में हाज़िर नहीं थे इस मजलिस में हाज़िर थे। इस ज़ईफ़ को सवाल जवाब के लिये हलक़े के दरमियान बिठाया गया। हाकिम ने उलमा से कहा यह शेख़ मुस्तफ़ा महदवी है, तुमको जो कुछ पूछना है पूछो। उसके बाद उलमा ने इस ज़ईफ़ से कहा कि तुम बुज़र्ग और पेशवा हो, तुम ऐसी क़ाबिलियत रखते हो कि हम जैसे तुम से फ़ाइदा हासिल करते हैं। तुम किस दलील से सय्यद मुहम्मद को महेदी कहते हो, अहादीस के ख़िलाफ़ क्यों ऐतक़ाद बांध लिये जब कि महेदी के लिये अहादीस में अलामात मुक़र्रर हैं।

इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि अलामाते महेदी अले० की अहादीस में तआरूज (विवाद) बहुत है। उस मुतआरिज़ा अहादीस के हुक्म से महेदी की ज़ात को मुशख़्ख़स करना, क़तअ नज़र इस बात के कि (महेदी) आये और गये या इसके बाद आयेंगे, तमाम मुहालात (असंभव) से है। उलमा ने कहा अफ़सोस अफ़सोस तुम जैसे बुज़र्ग को ऐसी ना माअक़ूल (अनुचित) बात नहीं कहना चाहिये, क्योंकि पैग़म्बर सल्ला० की हदीसौं में हरगिज़ तआरुज़ न होगा। तब इस ज़ईफ़ ने हाकिम से मुतवज्जूह होकर कहा कि तुम ख़ातिर जमई (इत्मीनान) के साथ मुतवज्जुह होजाव। हम कहते हैं कि अहादीस में तआरूज़ होता है और यह उलमा कहते हैं कि हरगिज़ तआरूज़ न होगा। अगर उलमा इल्मे हदीस के क़ायदे (नियम) से तआरूज़ न होने को साबित करदें तो हम अपने मुद्दआ में ग़लती पर होंगे। इस पर हाकिम ने उलमा की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा कि बहस के आग़ाज़ में ही तुम क्या ना माअकूल बात कहते हो। अगर अहादीस में तआरूज़ नहो तो मैं राफ़ज़ी हूंगा। मैं आज ही एक हदीस की किताब का मुतालआ कर रहा था। उस किताब में दज्जाल के निकलने की कैफ़ियत

देखा कि दो हदीसें एक - दूसरी के मुवाफ़िक़ नहीं। ज़ाहिर है कि जो अंहादीस महेदी अले० के बारे में आई हैं हर गिज़ बे तआरूज़ न होंगी। उलमा ने इसका कोई जवाब नहीं दिया, और इस ज़इफ़ से दूसरा सवाल कर दिया कि पैग़म्बर सल्ला० ने महेदी अले० के बारे में फ़रमाया है कि ज़मीन और आस्मान के रहने वाले महेदी अले० को दोस्त रखेंगे, और एक रिवायत में है कि ज़मीन और आस्मान के रहने वाले महेदी अले० से राज़ी होंगे। यह क्या बात है कि तुम्हारा इमाम और उसकी पैरवी करने वालौं से तमाम शहर के लोग बुग़्ज़ (शत्रुता) रखते हैं और उनको अपने से दूर रखते हैं। इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला के कलाम को देखो कि हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० को तकलीफ़ देने वाले मुद्दइयों के साथ एहसान करने और तालीफ़े क़ुलूब (दिलौं को जीतना) का हुकम हुआ, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है *''और भलाई और बुराई दोनों बराबर नहीं होसकते, बुराई को ऐसे तरीक़े से टालो जो बहुत अच्छा हो, फिर तुम देखोगे कि तुम में और जिसमे दुश्मनी थी, वह ऐसा हो गया जैसे कोई दोस्त क़राबत वाला''* (हा० मीम० अस-सज्दह ३४)। यानि ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० अपने दुश्मनौं के साथ मीठी बात करो और अच्छे अख़लाक़ से पेश आओ और उन की बुराइयौं को अपनी भलाइयौं से दूर करो, मसलं ग़ुस्से को सब्र से, जहातल को बुर्दबारी (सहनशीलता) से बुराई को मआफ़ी से, बख़ालत को सख़ावत से, क़तअ रहमी को सिला रहमी से फिर तुम देखोगे कि वह शख़्स जो तुम्हारा दुश्मन था मुहब्बत में क़रीबी दोस्त होजायगा, जब तुम ऐसा करोगे तो मुश्किलात आसान होजाऐंगे।

अब ग़ौर करना चाहिये कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० ने अल्लाह तआला के इस हुक्म की ताअमील इन्तेहा को पहुंचाई (पूरी तरह ताअमील की)। अच्छी नज़र से देखना चाहिये क्या आँहज़रत सल्ला० के

तमाम दुश्मन दोस्त हो गये और अपनी दुश्मनी से बाज़ आगये। यह बात ज़ाहिर व अज़्हर है यहाँ तक कि दुश्मनौं की अदावत बड़ी हुई है। पस ज़रूरत के लिहाज़ से आयत *''जिस में और तुम में दुश्मना थी''* के माना काफ़िरौं की ग़फ़लत, जहालत, अदावत, हसद और बग़ावत के करना चाहिये, ता कि आयत का मज़्मून हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० के हाल के मुवाफ़िक़ हो, क्योंकि यहाँ हसद और बग़ावत करने वाले मुस्तसना और मुम्ताज़ हैं, जैसा कि अल्लाह तआला ने उनके हक़ में फ़रमाया है *''अगर यह तमाम निशानियाँ भी देख लें तब भी उन पर ईमान न लायें''* (अल-अनआम-२५)। इसी तरह गुरोहे महदवियह के बारे में उन दो मख़सूस जमाअतौं यानि उलमाए ज़ाहिर और उनकी तक़लीद करने वालौं के सिवा जिस से पूछो सब एक ज़बान जवाब देंगे कि गुरोहे महदवियह के जैसा कोई गुरोह लताफ़त, नज़ाकत, हिम्मत, इस्तेक़ामत, मुरव्वत, फ़ुतूवत (उदारता), दियानत, उख़ूवत, शुजाअत, सख़ावत, तवक्कुल, तस्लीम इलल्लाह और तमाम अख़लाक़े हमीदा रखने वाला हम ने हरगिज़ नहीं देखा। पस जिस तरह क़ुरआने मजीद की आयत पैग़म्बर सल्ला० के बारे में दुरूस्त साबित हुई उसी तरह यह हदीस महेदी अले० और आप के गुरोह के बारे में दुरुस्त साबित हुई। रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़रमाया - तहक़ीक़ अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को दोस्त रखता है तो बुलाता है जिब्रईल अले० को और कहता है कि मैं फ़ुलाँ को दोस्त रखता हूँ तू भी उसको दोस्त रख। पस जिब्रईल अले० उसको दोस्त रखते हैं फिर निदा करते हैं आस्मान में और कहते हैं कि अल्लाह तआला फ़ुलाँ को दोस्त रखता है तुम भी उसको दोस्त रखो पस तमाम अहले आस्मान उस को दोस्त रखते हैं और अहले ज़मीन के पास भी वह मक़बूल होजाता है। इस हदीस से मालूम हुवा कि तमाम अम्बिया और औलिया चाहे साबेक़ीन से हों या अस्हाबे यमीन से, अहले आस्मान और अहले ज़मीन के पास

मक़बूल और महबूब हैं, उसके बावजूद फ़र्माने ख़ुदा *''और क़त्ल कर देते हैं अम्बिया को ना हक़ और मार देते हैं उनको जो इन्साफ़ करने को कहते हैं ''*(आले-इमरान-य) की इक़तिज़ा और ईस हदीस ''बेशक सख़्त तरीन बला अम्बिया पर डाली गई फिर औलिया पर'' के हुक्म से अम्बिया और औलिया पर बलायें नाज़िल हुवी जो कुछ नाज़िल होना थी ऊलुल-अज़्म अम्बिया और मुर्सिलीन की जमाअत पर। देखना चाहिये कि उन पर किस क़दर बला के पहाड़ टूट पड़े और उनके दुश्मनौं ने उन पर किस क़दर बुहतान उठाये और फिर पैग़म्बर सल्ला० को फ़रमाने ख़ुदा होता है कि *''पस तू सब्र कर जैसा कि सब्र किया ऊलुल-अज़्म पैग़म्बरौं ने''* (मुहम्मद-३५)। दीगर यह कि इमाम हसन और हुसेन रज़ी० हदीसे हाज़ा *''वह दोनों जन्नती नौजवनौं के सर्दार है''* के मुवाफ़िक़ मख़सूस हैं और *''आओ हम बुलऐं अपने बेटौं और तुम्हारे बेटौं को''* (आले-इमरान-६१) की आयत से मन्सूस हैं, लेकिन करबला की बला में हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० के क़रीबी ज़माने में असहाबे रसूल सल्ला० की औलाद और तमाम उम्मत के हाथ से किस क़दर बला और जफ़ा का शर्बत चखे हैं। अब जान्ना चाहिये जैसा कि हदीस ''अहले ज़मीन के पास भी मक़बूल हो जाता है'' तमाम अम्बिया और औलिया के हक़ में सादिक़ आती है, उसी तरह हदीस ''आस्मान और ज़मीन के रहने वाले उसको दोस्त रखते है'' महेदी अले० और आप की पैरवी करने वालौं के हक़ में सादिक़ आती है। उसके बाद उलमा ने कहा कि हदीस की तावील नही करनी चाहिये, जैसा कि हदीस का लफ़्ज़ है उस पर ईमान लाना चाहिये और उसके ख़िलाफ़ से परहेज़ करना चाहिये। इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि अबू हनीफ़ा रहे० के मज़्हब की बुन्याद तावील (स्पष्टी करण) पर है, यहाँ तक कि शाफ़ई उलमा हनफ़ी मज़्हब के उलमा को अस्हाबे राय कहते हैं, और अपने मज़्हब के उलमा को अस्हाबे हदीस कहते हैं।

रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़रमाया कि आमाल का तअल्लुक़ निय्यतौं से है, और आँहज़रत सल्ला० ने फ़रमाया कि हर शख़्स को वही मिलता है जिसकी वह निय्यत करे। आँहज़रत सल्ला० ने यह भी फ़रमाया कि जिस ने वज़ू की निय्यत नहीं की उसका वज़ू न हुआ। यहाँ इमाम शाफ़ई रहे० हदीस के लफ़्ज़ से तमस्सुक करते हैं और इमाम अबू हनीफ़ा रहे० अपने मज़्हब की बिना तावील पर रखे हैं। यह बात उस शख़्स पर मख़फ़ी नहीं जो मुज्तहदीन रहे० के इख़तिलाफ़ात से अच्छी तरह वाक़िफ़ है। उसके बाद उलमा ने कहा जो कुछ तुम ने कहा हम ने मान लिया, अब तुम भी अगर तावील करते हो तो ऐसी तावील करो कि हमारे दिल को तस्कीन हो। इस ज़ईफ़ ने कहा कि तुम्हारे दिल की तशफ़्फ़ी करना हम पर लाज़िम नहीं। हमने अहकामे दीनिया के क़वायद की ताईद और उलूमे इसलामिया के क़वानीन की मज़्बूती से अपने और अपने ताबईन के दिल की तस्कीन की है। इमाम आज़म रहे० जैसा कामिल इन्सान मर्तबए इज्तिहाद के कमाल और अच्छे और आला एतक़ाद और अमल के बावजूद इमाम शाफ़ई रहे० के दिल की तस्कीन नहीं कर सका, और दोनों इमामौं का इखतिलाफ़ दूर न होसका तो हम इल्म और इस्तिम्बात के बाब में इमाम आज़म रहे० से फ़ाइक़ (श्रेष्ठ) नहीं, और तुम इन्साफ़ और इदराक (बोध) में इमाम शाफ़ीई रहे० से फ़ाज़िल नही, तो फिर तुम्हारे और इमारे दरमियान से यह इख़तिलाफ़ कैसे दूर हो। अल्लाह तआला फ़रमाता है *''और अपने भेजे हुए बंदौं के लिये हमारा वाअदा पहले ही हो चुका है। कि बेशक वही ग़ालिब किये जाऐंगे। और बेशक हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहने वाला है''* (उस-साफ़्फात-१७१-१७३)। ऐक और जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है *''अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला, ज़बरदस्त है''*(अल-मुजादलह-२१)। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है *''और तुम ही*

ग़ालिब रहोंगे अगर तुम मोमिन हो'' (आले - इमरान-१३९)। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है *''मोमिनों की मदद करना हमारा हक़ है''* (अर-रूम-४७)।

ईन आयात के जैसी बहुत सी आयतें क़ुरआन मजीद में हैं। अब तुम इन आयात के ज़ाहिर अलफ़ाज़ की दलालत पर हुकम करते हो या इस तरह बयान करते हो कि तमाम अम्बिया और मोमिनों के अहवाल के मुवाफ़िक़ हो और उन पैग़म्बरों के बाब में जो अव्वल से आख़िर तक उन्हों ने ज़ाहिरी ग़ल्बा नहीं पाया बल्कि दुश्मनों के हाथ से क़त्ल हुवे। दूसरी मोमिनों की जमाअत मसलं फ़िरऔन के जादूगर, और अस्हाबे अख़दूद और उनके जैसे मोमिनों के बारे में तुम क्या कहते हो कि यह लोग ग़ालिब, मुज़फ़्फ़र और मन्सूर थे या नहीं। अगर ज़ाहिर अलफ़ाज़ की दलालत पर नज़र करते हो तो कहना चाहिये कि वह ग़ालिब और मन्सूर (विजेता) नहीं थे। ऐसे माना करना दर हक़ीक़त उन पर इलज़ाम देना है। चूंकि उन मोमिनों की हक़ीक़त क़तई दलाइल से साबित हो चुकी है इस लिये हम को और तुम को ज़रूरी है कि आयात और अहादीस की तफ़सीर इस तरह बयान करें कि पैग़म्बरौं और उनकी पैरवी करने वालौं के हाल के मुवाफ़िक़ हो ता कि हम दीन के दायरे से ख़ारिज न हो जाऐं। और अल्लाह बेहतर जान्ने वाला है।

तीसरी मजलिस

इस ज़ईफ़ को बेड़ी डाले हुए मजलिस में लाये तो अब्दुन् - नबी अक़लमंद जो बादशाह की मजलिस के हलक़ए उलमा का सर्दार था कहा ऐ बादशाह इन्साफ़ कर कि यह महेदवी थोड़े हैं उनकी बात कैसे क़ुबूल हो। बहुत से लोग कहते हैं कि महेदी अले० आऐंगे और यह थोड़े महेदवी कहते हैं कि महेदी अले० आये और गये, इस लिये ऐ बादशाह तुम पूछो कि शेख़ मुस्तफ़ा क्या कहता है।

इस ज़ईफ़ ने कहा कि बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अले० और उनके भाईयौं की गुफ़तगू सुनी है य नहीं। अब्दुन नबी ने कहा बहुत दफ़ा सुनी है। बादशाह ने कहा फ़रमाइये मैं ने तुम्हारी ज़बानी नहीं सुनी। इस ज़ईफ़ ने कहा ऐ बादशाह दस भाई ऐक माँ से थे और यूसुफ़ अले० और बिन यामीन दूसरी माँ से थे। यूसुफ़ अले० के भाइयौं ने हसद से कहा कि यूसुफ़ को कत्ल कर डालो या उसको ऐसी ज़मीन में डाल दो जहाँ कोई आदमी न हो या उसको अंधेरे कूंवें में डाल दो। पस उन्हों ने अपने वालिद बुज़ुर्गवार के पास खेलने का बहाना करके यूसुफ़ अले० को बाहर ले गये और उनको किनआन के कूंवे में डाल दिया और दूसरी बार यूसुफ़ अले० को एक सौदागर के हाथ बेच दिया। यूसुफ़ अले० के भाई बहुत थे और यूसुफ़ अले० एक थे, अब उनके दरमियान कौन झूटा था। बादशाह ने कहा यूसुफ़ अले० के तमाम भाई गुनहगार और झूटे थे। इस ज़ईफ़ ने कहा यूसुफ़ अले० के भाई बहुत थे किस तरह गुनहगार और झूटे होंगे। बादशाह ने कहा तुमने यह बात हम पर चसपाँ की। इस ज़इफ़ ने कहा मैं ने हज़रत यूसुफ़ अले० की बात तुम्हारे सामने इस लिये पेश की है कि मुल्लायाँ शेख़ाँ बहुत हैं और कहते हैं कि महेदी अले० आयेंगे। बन्दा और बन्दे के भाई थोड़े हैं और कहते हैं कि महेदी अले० आये और गये। पस उनमें कौन झूटे हैं बादशाह अल्लाह के लिये इन्साफ़ करें। इस मौक़े पर

भी बादशाह ने यूसुफ़ अले० की तरह हक़ होने को क़ुबूल किया। इस ज़ईफ़ ने कहा अगर ऐसा ही है तो हम महेदवी हक़ पर हैं जो कहते हैं महेदी अले० आये और गये, क्योंकि हम थोड़े हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है *''उनमें के थोड़े ईमान लाये और उनमें के अकसर फ़ासिक़ (पापी) है''* (आले-इमरान-११०)

हर ज़माने में हर रसूल का इनकार बहुत से अश्ख़ास ने किया है और थोड़े अश्ख़ास ईमान लाये। इसी तरह महेदी ट्ठले० के ज़माने में बहुत से लोग मुन्किर हुवे और थोड़े ईमान लाये। पस क़तई हुज्जत से साबित हुआ कि महेदी अले० आये और गये। दीगर यह कि ऐ बादशाह आदम अले० को पैदा करने से पहले तमाम फ़रिश्तौं को अल्लाह तआला का फ़रमान हुआ कि *''और जब तेरे रब ने फ़रिश्तौं से कहा कि मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ। फ़रिश्तौं ने कहाः क्या तू ज़मीन में ऐसे शख़्स को ख़लीफ़ा बनाऐगा जो इसमें फ़साद फैलाये और ख़ून बहाए। और हम तेरी हम्द करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने फ़र्माया कि मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते, और अल्लाह ने सिखा दिये आदम को सारे नाम, फिर उन्हें फ़रिश्तौं के सामने पेश किया और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन चीज़ौं के नाम बताओ। उन्हों ने कहा तू पाक है जितना इल्म तू ने हमें सिखाया है उसके सिवा हमें कुछ मालूम नहीं, बेशक तू दाना और हिकमत वाला है''* (अल-बक़रह ३०-३२)

आदम अले० को पैदा करने से दो हज़ार साल पहले फ़रिश्तौं को अल्लाह तआला का फ़रमान हुवा कि मैं बनाने वाला हूँ आदम को जो रूए ज़मीन पर ख़लीफ़ा होगा। फ़रिश्तौं ने कहा या अल्लाह क्या तू उस शख़्स को पैदा करता है जो ज़मीन पर ख़ूंरेज़ी और तबाही फैलाएगा, और हम तो ख़ास तेरी पाकी और सना में मश्ग़ूल रहते हैं। अल्लाह तआला ने कहा हम जो कुछ जानते हैं तुम नही जानते। जब आदम अले० को पैदा किया

तो तमाम चीज़ौं की तालीम दी उनके नामौं के साथ और बयान किया जो कुछ अल्लाह की ख़िलक़त थी। पस तमाम चीज़ौं को फ़रिश्तौं पर पेश किया और कहा अल्लाह तआला ने कि हमको तमाम पैदा की हुई चीज़ौं के नाम से आगाह करो अगर तुम सच्चे हो. फ़रिश्ते मोमिन थे तौबा किये, अल्लाह का हुक्म बजा लाये और कहा कि हम उतना ही जानते हैं जितना तू ने हम को सिखाया, बेशक तू हर चीज़ को जान्नेवाला और ख़िलक़त को हुक्म करने वाला है। (मक़ामे ग़ौर है कि) तमाम फ़रिश्ते आस्मान पर थे और सब नूर से पैदा हुवे थे (उसके बावजूद) उन्हों ने आदम अले० की ख़िलाफ़त पर हसद किया। इसी तरह जो लोग गुनाहौं से भरे हुवे हैं और दुनिया की तलब मे हैरान और परेशान हैं, महेदी अले० और महेदवियौं और ख़ुदा के तालिबौं पर क्यों हसद न करें। जब फ़रिश्तौं ने तौबा की और अल्लाह के फ़रमान पर ईमान लाया और नीसती और आजिज़ी इख़तियार की तो ख़ुदाऐ तआला की बारगाह मे मक़बूल हुवे। उसी तरह यह लोग जो महेदी अले० के मुन्किर हैं सुबूते महेदियत की हुज्जतें सुने। जिस में ईमान है वह तौबा करता है, नीसती और आजिज़ी इख़तियार करता है और महेदी अले० को क़ुबूल करता है वह ख़ुदाऐ तआला की बारगाह में मक़बूल होता है। शैतान से गुनाह हुआ और आदम को सज्दह नहीं किया और कहा कि मैं आदम अले० से बेहतर हूँ। तकब्बूर (अभिमान) और ग़ुरूर किया,चंद हज़ार साल हुए तौबा नहीं किया और न तौबा करता है। इसी तरह जिस शख़्स में ईमान नहीं वह तौबा नहीं करता बल्कि तकब्बूर और ग़ुरूर करता है और महेदी अले० को क़ुबूल नहीं करता पस वह काफ़िर है। जो शख़्स हक़ के भेजे हुवे को क़ुबूल नहीं करता है वह काफ़िर है, चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाता है *''और जो ख़ुदा के नाज़िल फ़र्माये हुवे अहकाम के मुताबिक़ हुक्म न दे तो ऐसे हो लोग काफ़िर है''* (अल-माहदा-४४)। नबी सल्ला० ने फ़रमाया कि ''जिस ने

इन्कार किया महेदी का पस तहक़ीक़ कि वह काफ़िर है'', यह हदीस तबक़ातुल-फुक़हा में है।

उसके बाद इस ज़ईफ़ ने कहा कि ऐ बादशाह इन्साफ़ कर कि ख़ुदाए तआला ने अपने कलामे मजीद में फ़रमाया है *''ऐ दाऊद हमने तुम को ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया है तू लोगौं में इन्साफ़ के फ़ैसले किया कर और ख़ाहिश की पैरवी न करना कि वह तुम्हें ख़ुदा के रास्ते से भटका देगी''* (साद-२६)। नबी करीम सल्ला० ने फ़र्माया कि ''आल्लाह की रहमत हो उस शख़्स पर जो इन्साफ़ किया और अल्लाह की लाअनत हो उस शख़्स पर जो इन्साफ़ नहीं किया''। जब बादशाह ने यह बात सुनी तो कहा ऐ शेख़ मुस्तफ़ा तुझ पर अल्लाह की रहमत हो और अल्लाह तुझ को बर्कत दे। उसके बाद बादशाह ने आलिमौं और शेख़ौं की तरफ़ रूख़ करके कहा तुम भी कुछ हुज्जत पेश करो और कुछ जवाब दो, मगर किसी शख़्स ने जवाब नहीं दिया। अल्लाह तआला फ़रमाता है *''वक़ुल जाअल हक़्क़ु वज़हक़ल बातिलु, इन्नल बातिल काना ज़हूक़ा''* (वनी-इसरईल-८१) यानि कहदो ऐ मुहम्मद सल्ला० कि हक़ आ गया और बातिल नाबूद हो गया बेशक बातिल नाबूद होने वाला है। यानि बातिल कभी हक़ पर ग़ालिब न होगा, जैसा कि नबी करीम सल्ला० ने फ़रमाया कि हक़ ग़ालिब है हरगिज़ मग़लूब न होगा। पस साबित हुआ कि महेदी अले० आये और गये।

मुबाहसे के लिये बादशाह के हुज़ूर में चंद सौ आलिमाँ और शेख़ाँ जमा हुवे थे, अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सब मग़लूब (प्रजित) और लाजवाब हुवे। उसके बाद आलिमौं ने पूछा कि महेदी अले० आकर गये सो कितना अर्सा हुवा? इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह सल्ला० की हिजरत के बाद नौ सौ पांच साल (९०५ हिज्री) पर आये और दस्वीं सदी हिज्री में महेदियत का दाअवा फ़रमाया और मुहम्मद सल्ला० के दीन की

नुसरत फ़रमा कर गये। हम ने आप अले० की पैरवी की, चुनांचे तवारीख़ में अस्हाबे तवारीख़ के इत्तफ़ाक़ से हदीसे नबवी लिखी हुवी है। अबू हुरेरा रज़ी० से मर्वी है रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़रमाया कि ''अल्लाह तआला भेजेगा इस उम्मत के लिये हर सदी के रास पर एक ऐसे शख़्स को जो इस उम्मत के लिये उसके दीन की तज्दीद करेगा''। अस्हाबे तवरीख़ ने इस बात पर इत्तेफ़ाक़ किया है कि दस्वीं सदी में महेदी अले० के सिवाय कोई दूसरा मुजद्दिद न होग। उसके बाद इस ज़ईफ़ ने यह बैत पढ़ी

आफ़ताब आसमाँ से तुलूअ हुआ
अंधी आंख नहीं देखती तो क्या फ़ाइदा
आफ़ताब सर पर आया मेरी ढाल हाथ में है
च्यूंटी अगर शकर नहीं चुन्ती है तो कहदो मत चुन
अंधा अगर हरगिज़ नहीं देखता है कह दो कि मत देख।

उसके बाद इस ज़ईफ़ ने बादशाह से कहा कि अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है कि *''और कर लिया करो दो गवाह मरदौं में से''* (अल-बक़रह - २८२), यानि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम गवाह तलब करो तुम्हारे मरदों में से। अल्लाह तआला ने ना-मरदौं की गवाही नहीं कहा और न ना-मरदौं की गवाही तलब की। नबी करीम सल्ला० ने फ़रमाया कि दुनिया का तालिब मुख़न्नस (नपुंसक) है और आख़िरत का तालिब मुअन्नस (स्त्रीलिंग) है और अल्लाह का बालिब मुज़क्कर (मर्द) है। रसूलुल्लाह सल्ला० ने यब भी फ़रमाया कि ''जिस शख़्स ने रमज़ान का चांद देखा तो उस पर रोज़ा रखना फ़र्ज़ हुआ'' और उस मर्द की गवाही को दूसरौं ने पसंद किया तो उन पर भी रोज़ा रखना लाज़िम है। इसी तरह हम ने आयत और हदीस की हुज्जत देखी और ख़ुदा और रसूले ख़ुदा सल्ला० की गवाही सुनी तो हम पर महेदी अले० को क़ुबूल करना फ़र्ज़ हुआ इस सबब से हम ने क़ुबूल किया है,

और महेदी अले० आये और गये कहते हैं, और बन्दे के कहने पर बहुत से लोगों ने क़ुबूल करलिया। जो शख़्स क़ुबूल नहीं करता है उसका वबाल उसकी गर्दन पर है यानि उसकी जगह दोज़ख़ है। उसके बाद इस ज़ईफ़ ने कहा कि ऐ बादशाह इन आलिमों और शेखों से कहो कि बन्दे ने ख़ुदा और रसूले ख़ुदा सल्ला० और मोअतबर किताबों की गवाही पेश की है, इस लिये तुम भी आयत, हदीस और मोअतबर किताबों से कुछ हुज्जत पेश करो कि (उनके क़ौल से) फ़लाँ तारीख़ को महेदी अले० आयेंगे। उसके बाद बादशाह आलिमों और शेखों की तरफ़ मुतवज्जह हुवा और जिन लोगों ने यह सवाल किया था कि महेदी अले० कौन से सन् में आये उन से कहा कि शेख़ मुस्तफ़ा ने अपने मद्दआ पर जो हुज्जतें पेश की तुम सब लोग सुन चुके, अब तुम भी कुछ हुज्जत पेश करो, लेकिन किसीने जवाब नहीं दिया।

उसके बाद इस ज़ईफ़ ने कहा ऐ बादशाह एक दूसरी हुज्जत भी सुन लीजिये। अल्लाह तआला अपने कलाम में उन लोगों के हक़ में जो क़ुरआन पढ़ते है लेकिन क़ुरआन पर अमल नहीं करते फ़रमाता है कि *''जिन लोगों के सर पर तौरात लादी गई फिर उन्हों ने उसके बारे ताअमील को न उठाया उनकी मिसाल गधे की सी है जिन की पीठ पर बड़ी-बड़ी किताबें लदी हो''* (अल-जुमुअह-५)। यानि जो लोग क़ुरआन पढ़ते हैं लेकिन उस पर अमल नहीं करते उनकी मिसाल ऐसी हैं जैसा कि गधा अपनी पीठ पर पत्थर या लकड़ी का बोझ उठाया हुवा है। नबी करीम सल्ला० ने फ़रमाया है कि ''वह आलिम जो अपने इल्म पर अमल नहीं करता है पस वह गधे की मानिंद है।

ऐ कम समझ तेरे जिस्म पर गधे का बोझ लादें
तेरा कान पकड़ कर लावें और कहें कि ख़ामूशी के साथ चल।

बैत

वहं जो तू देखता है कि सब आदमी हैं
उनमें बहुत से बग़ैर दुम के बैल और गधे हैं

शेख़ मुइियुद्दीन इब्न अरबी रहे० का क़ौल है कि ''तमाम ताअरीफ़ अल्लाह के लिये है जिस ने गधे को बशर की सूरत में पैदा किया''।

रुबाई

ऐ नादान आलिम तू कितना इल्म पढ़ेगा
जै इल्म बातिनी है मैं जानता हूँ तू नहीं जानता
तेरे सर के बाल सर्फ़-व-नहू के हासिल करने में सफ़ेद होगये
जो इल्म कि रब्बानी है उसका ऐक हर्फ़ तुझको हासिल न हुआ

बैत

तुने गधे की पीठ पर बहुत सी किताबें रख दीं
उसको नहीं कह सकते कि वह अहले बातिन है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है *''यह लोग चौपायों की तरह हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा भटके हुवे हैं''* (अल-आराफ़-१७९), इस लिये कि अल्लाह तआला ने उनको जिस चीज़ के लिये पैदा किया वह काम करते हैं और अल्लाह तआला की तस्बीह करते हैं, लेकिन बाज़ लोग ख़ुदा को याद नहीं करते हैं, और ख़ुदा की बन्दीगी नहीं करते, इसलिये वह दोज़ख़ में हमेशा जलेंगे। कुत्तों, सुव्वरों, गधों और तमाम चौपायों को दोज़ख़ का अज़ाब नहीं है लेकिन जो लोग ख़ुदा और रसूले ख़ुदा सल्ला० का ख़िलाफ़ करते हैं और उसी हालत में मरते हैं, वह लोग दोज़ख़ में हमेशा जलेंगे, इसी सबब से चौपायों से ज़ियादा बुरे हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है ''ऐ *अहले किताब तुम हक़ को बातिल के साथ क्यों मिलाते हो और हक़ को क्यों छुपाते हो जबकि तुम जानते भी हो''* (आले-इमरान-७१) यानि तुम जानते हो कि मुहम्मद सल्ला० बर हक़ हैं। इसी तरह महेदी अले० की

सिफ़ात को किस लिये छुपाते हो, कंगन को आइने में देखने की क्या ज़रूरत है वह तो ज़ाहिर व अज़्हर है मगर जो शख़्स अंधा है क्या देखे।

रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़रमाया कि ''जो मक्खी नजासत पर बैठती है वह उन उलमा और फ़ुक़हा से बेहतर है जो बादशाहों के दरवाज़े पर जाते हैं''। यानि हिर्स और दुनिया की तलब में बादशाह के पास जाते हैं। पस जिन लोगों में ऐसी सिफ़त (गुण) मौजूद हो वह हज़रत महेदी अले० को क्यों कुबूल करेंगे। जो शख़्स हक़ का तालिब है, इन्साफ़ करने वाला है और मुरदार दुनिया को तर्क किया है वही हक़ पर है और वही महेदी अले० को क़ुबूल करेगा और क़ुबूल किया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है *''अहले किताब और मुश्रिकीन में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया है वह कुफ़्र से बाज़ आने वाले न थे यहाँ तक कि उनके पास बाज़ेह दलील (बय्यिनह) आ जाये''* (अल-बय्यिनह-१), यानि एतक़ाद में एक थे कि मुहम्मद सल्ला० आयेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है *''और अहले किताब मुतफ़र्रिक़ और मुख़तलिफ़ हुवे हैं तो वाज़ेह दलील आने के बाद हुए हैं''* (अल-बय्यिनह-४), यानि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० उनके पास बयान के साथ आने के बाद वह मुख़तलिफ़ हो गये। इसी तरह आलिमों का इत्तफ़ाक़ था कि महेदी अले० ९०५ हिज्री में आयेंगे। जब ममेदी अले० आ गये तो आलिमाँ और शेखाँ मुतफ़र्रिक़ होगये, मगर थोड़े लोग जो अहले इन्साफ़ और ख़ुदा के तालिब थे उन्हों ने महेदी अले० को क़ुबूल किया और दूसरे लोगों ने इन्कार किया कि यह महेदी वह नहीं हैं जो मौऊद (वादा किया हुआ) है। यह तमाम इबारत अब्दुर रज़्ज़ाक़ काशी की तफ़सीर तावीला तुल-क़ुरआन की है। उसके बाद इस ज़ईफ़ ने कहा कि ऐ बादशाह बन्दा कहता है कि एक रूक़आ लिख देता हूँ और तमाम आलिमों और शेखों से कहो कि तुम भी एक रूक़आ लिख कर दो कि जो शख़्स आयत और हदीस के बग़ैर बात करे उसका मूंह काला करके गधे पर सवार करें

और बाज़ार में फिराऐं और पत्थरों से मारें। इस ज़ईफ़ ने रूक़आ लिख कर बादशाह के सामने रख दिया लेकिन आलिमों और शेखों ने रूक़आ नहीं लिखा। बादशाह ने वजह पूछी तो उलमा में से एक ज़ियादा बुज़र्ग आलिम ने जवाब दिया कि हम को आयत और हदीस में इस क़दर आगाही नहीं है, शेख़ मुस्तफ़ा को रात दिन आयत और हदीस से आगाही है। बादशाह ने कहा तुम इस क़दर इल्म पढ़े हो और आयत और हदीस से बहस नहीं करते। आयत और हदीस तो असल है, क्यों आयत और हदीस से वाक़िफ़ न हुवे। बादशाह अब्दुन-नबी पर ग़ुस्सा हुआ और कहा कि गधा लाओ और इन मुल्लाओं का मुंह काला करो और गधे पर सवार करके कूचा व बाज़ार में फिराओ। तमाम अहले मजलिस उठ गये और आजिज़ी शरु की कि बादशाह सलामत मआफ़ करें। जब बादशाह की ज़बान से यह बात निकली कि गधे पर सवार करो तो गोया ऐसा ही किया गया। उसके बाद वह आलिम जिस ने बहस शुरू की थी उस को मजलिस से बाहर कर दिये और बहुत फ़ज़ीहत और रुसवा (अपमान) किये। वह मजलिस ख़त्म तुई।

चौथी मजलिस

आलिमौं ने कहा ऐ बादशाह मियाँ मुस्तफ़ा से पूछो कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है कि ''दुन्या मुरदार है और उसके तालिब कुत्ते है''। मुरदार के लिये बू है और दुन्या की बू क्या है और कैसी है? बादशाह ने इस ज़ईफ़ से कहा कि यह क्या बात है जवाब बा सवाब (उचित उत्तर) फ़रमाइऐ। इस ज़ईफ़ ने कहा हाँ जिनको दुन्या की बू आई उन्हों ने तर्के दुन्या की और जो ख़ुदा के तालिब हैं वह भी तर्के दुन्या करते हैं, क्योंकि उनको नजासत और मुरदार की बू से ज़ियादा गन्दी दुन्या की बू आई है, लेकिन बे अक़लौं की समझ में नहीं आता, क्योंकि कुत्ते मुरदार खाने के लिये जाते हैं तो कुत्तौं को मुरदार की बू नहीं आती वह फ़राग़त से खाते हैं। यही हाल दुन्या के तालिबौं का है कि उनको दुन्या की गन्दी बू नहीं आती इस लिये दुन्या को तलब करते हैं और कुशादा दिली से खाते हैं और ख़ुश होते हैं।

हिकायत है कि एक रोज़ पैग़म्बर अले० सहाबा रज़ी० के साथ तश्रीफ़ ले जारहे थे। रास्ते में एक मरे हुए चूहे के टुकड़े फूले हुवे देखे। पैग़म्बर अले० अपने सहाबा रज़ी० के साथ ख़ड़े होगये। चूहे की बद बू ऐसी थी कि रसूल अले० और तमाम सहाबा रज़ी० ने अपनी - अपनी नाक को कपड़ा लगा लिया। पैग़म्बर अले० ने फ़र्माया दोस्तो क्या तुम में से कोई शख़्स इस मुर्दार चूहे को ख़रीदता है? सहाबा रज़ी० ने कहा किसी काम का नहीं है ईस मुर्दार को लेकर हम क्या करेंगे। उसके बाद रसूल सल्ला० ने फ़र्माया कि जो कीड़े इस मुर्दार और नजासत में हैं और दिन रात उसको खाते हैं और मोटे होते हैं, अगर इन कीड़ौं को इस मुर्दार और नजासत से बाहर करदें तो वह कीड़े उसी वक़्त हलाक होजाते हैं। इसी तरह उस शख़्स का हाल है जिसके दिल पर दुन्या की मुहब्बत ग़ालिब होगई है। दुन्या में आराम लेते और मोटे होते हैं। जब उनको दुन्या

से बाहर करते हैं तो हलाक होजाते हैं। पस यह लोग उन कीड़ौं के मानिंद हैं कि जिन के दिमाग़ में मुर्दार और नजासत की बद बू बस गई है और यह कीड़े रात-दिन नजासत में रहते हैं, उसी तरह जो शख़्स इन कीड़ों की मानिंद रात-दिन दुन्या की मुहब्बत और दुन्या की तलब में रहता है उसको भी दुन्या की बद बू नहीं आती क्योंकि उसके दिमाग़ में भी दुन्या की बू बस गई है और वह मोटा हो गया है। अगर दुन्या को उस से छुड़ाऐं तो वह हलाक हो जाता है, यानि दुन्या के तालिबों को दुन्या की मुहब्बत और दुन्या की मताअ (पूंजी) अच्छी मालूम होती है। मताअ उसको कहते हैं कि औरतौं को हैज़ आता है तो कपड़े का टुकड़ा लेकर उस कपड़े को ख़ून आलूद करके फेंक देते हैं। दुन्या उस हैज़ के ख़ून से भरे हुए कपड़े से ज़ियादा बुरी है और तालिबाने दुन्या को अच्छी मालूम होती है। इसी लिये नमाज़ पढ़ना, क़ुरआन का बयान सुन्ना और उस पर अमल करना, तर्के दुनया करना, तक़वा, अल्लाह तआला पर भरोसा करना, ज़िक्रे ख़फ़ी, ख़ुदा तआला से इश्क़ व मुहब्बत इख़तियार करना और महेदी अले० को ख़ातिमे विलायते मुहम्मदी की हैसियत से क़ुबूल करना मरने के वक़्त तक अच्छा नहीं मालूम होता।

एक और हिकायत है कि एक रोज़ एक मेहतर (सफ़ाई कर्मचारी) अत्तारौं (सुगन्धकार) के मुहल्ले में आगया था। अतर की ख़ुश्बू उसके दिमाग़ में पहुंची तो उसको बुरी मालूम हुई और वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। मुहल्ले के लोगौं ने तअज्जुब किया कि इस मर्द पर क्या आफ़त आ पहुंची है। अचानक शेख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार रहे० का गुज़र उस मक़ाम पर हुआ तो पूछा कि यह किस क़िसम का आदमी है। लोगौं ने कहा कि यह मर्द मेहतर है। शेख़ फ़रीदुद्दीन रहे० ने फ़र्माया कि सब लोग उसके पास से दूर हो जाओ, क्यों कि इस मर्द की दवा को मैं बेहतर जानता हूँ। सब लोग दूर होगयो। शेख़ रहे० ने एक शख़्स को भेजकर

थोड़ा ताज़ा गूह मंगवाया और कहा कि इस गूह को मेहतर की नाक के पास रखो। ऐसा ही किया गया और थोड़ा गूह उसके दिमाग़ में भी पहुंचाया गया। एक घंटा गुज़रा कि गूह की बू उसके दिमाग़ में पहुंची और वह होशियार होगया। वह उठ कर बैठ गया और मूंह और नाक को कपड़े से पाक किया। क्या देखता है कि कपड़ा गूह में भरा हुआ है, उसको अच्छा मालूम हुवा और गूह दूर नहीं किया बल्कि ख़ुश हुवा और अपने घर का रास्ता लिया। जब अपने घर में पहुंचा तो अपनी औरत और बच्चौं को जो क़िस्सा गुज़रा था पूरा बयान किया और गूह में भरा हुआ कपड़ा अपनी औरत और बच्चौं को दिखाया तो घर के लोगौं ने उसको गालियाँ दीं कि ऐ बद बख़्त और ऐ बे अक़ल तू किस लिये अत्तारौं के मुहल्ले में गया था हलाक हो गया था। उसने कहा कि मैं गूह खाया और तौबा किया कि मैं फिर कभी उस मुहल्ले की तरफ़ नहीं जाऊंगा।

यही हाल उस शख़्स का है जो दुन्या का तालिब है। दुन्या के तालिब को क़ुरआन का बयान सुन्ना और उसपर अमल करना, नमाज़ पढ़ना, तक़वा, तवक्कुल, तर्के दुन्या करना, ख़ुदा तआला से इश्क़ व मुहब्बत करना और ख़ुदा की राह मे जान और माल ख़र्च करना अच्छा नहीं मालूम होता, क्योंकि यह सारी बातें ख़ुशबू के मानिंद हैं। अल्लाह तआला फ़र्माता है *''और अल्लाह से बढ़कर किस की बात सच्ची हो सकती है''* (अन-निसा-८७)। दूसरौं को (तालिबाने दुन्या को) यह बात अच्छी नहीं मालूम होती बल्कि उनको बे होश करदेती है और उस मेहतर को तरह जब नजस दुन्या की हक़ीक़त और दुन्या की गुफ़तगू सुनते हैं, और दुन्या की नजासत की बू उनके दिमाग़ में पहुंचती है तो फिर होश में आते हैं जैसा कि गूह की बू मेहतर के दिमाग में पहुंची तो होशियार हो गया। रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है ''आदम अले० के फ़रज़न्दौं के पाएख़ाना करने की जगह दुन्या है'' और दुन्या की बू मुर्दार की बू से ज़ियादा गंदी

है। हक़ के तालिबों को दुन्या की बद बू आती है इसी लिये उन्हों ने तर्के दुन्या किया और ख़ुदा की तलब इख़तियार की और मरदौं का ख़िलअत पाया। अल्लाह तआला अपने कलाम में फ़र्माता है *''ऐसे लोग जिन को ख़ुदा के ज़िक्र से न सौदा गरी ग़ाफ़िल करती है न ख़रीद व फ़रोख़्त''* (अन-नूर-३७)। दुन्या के तालिबौं को दुन्या की बद बू नहीं आती क्योंकि दुन्या की नजासत की बू उनके दिमाग़ में मेहतर की तरह बस गई है। यह लोग तर्के दुन्या क्यों करने लगे। अगर इत्तेफ़ाक़न तालिबाने दुन्या में से कोई शख़्स अपने घर जा कर क़ुरआन के बयान और नसीहत का अहवाल अपने घर वालौं से कहता है तो ग़ुस्सा होते हैं और कहते हैं कि हम दुन्या का कसब करते हैं, हमको यह बातें अच्छी नहीं मालूम होती और हमारे मुवाफ़िक़ नहीं हैं।

जब अतर का सामान कसरत से मौजूद है
तू गूह उठाने का काम करता है किसी का क्या नुक़सान।

पाँचवी मजलिस

एक रोज़ बादशाह के हुज़ूर में इस ज़ईफ़ को मजलिस में लाये। बादशाह की मजलिस के उलमा ने महेदियत की बहस शुरू की। तमाम उलमा अकबर बादशाह के हुज़ूर में जमअ हुए और ज़ुहर की नमाज़ जमाअत से अदा की और यह ज़ईफ़ अकेला नमाज़ अदा किया। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे और मजलिस में बैठे तो अब्दुन नबी ने कहा कि ऐ बादशाह मियाँ मुस्तफ़ा से पूछो कि मुसलमानौं को किस लिये काफ़िर कहते हो। इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि ऐ बादशाह अब्दुन नबी से पूछो कि मैं ने फ़ौरन् किस शख़्स को काफ़िर कहा है या फ़ौरन काफ़िर कहता हूँ इस पर गवाह पेश करो। मुल्लाओं ने कहा अगर तुम काफ़िर नहीं कहते तो फिर हमारे पीछे नमाज़ क्यों नहीं पढ़ते। इस ज़ईफ़ ने कहा ऐ बादशाह तुम कौन से ख़ानवादे के मुरीद हो तो बादशाह ने अपने दोनों हाथ कानौं पर रख कर सर झुका कर कामिल ताज़ीम के साथ कहा कि बन्दा हज़रत ख़ाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहे० के ख़ानवादे का मुरीद है, मेरे पीर हज़रत ख़ाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहे० हैं। इस ज़ईफ़ ने कहा कि अगर किसी ने कहा कि ख़ाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहे० बद राह और गुमराह थे लोगौं को गुमराह किया तो तुम उसको क्या कहते हौ? बादशाह ने कहा मैं उसको काफ़िर कहता हूँ और अपने हाथ से उसको क़त्ल करूंगा।

इस ज़ईफ़ ने कहा कि मेरे पीर महेदी मौऊद आख़िरूज़-ज़माँ अले० हैं, अगर किसी ने कहा कि महेदी अले० और महेदवियाँ गुमराह हैं और लोगौं को गुमराह करते हैं तो बन्दा उनके पीछे नमाज़ क्यों पढ़े। बन्दा अपनी ज़ात से किसी को काफ़िर नहीं कहता, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ला० ने जो कुछ फ़र्माया है वह हदीस पढ़ता है ''जिस ने महेदी अल० का इन्कार किया पस तहक़ीक़ कि वह काफ़िर है'' और यह हदीस

तबक़ातुल-फ़ुक़डा में मज़्कूर है। बन्दा रसूलुल्लाह सल्ला० का फ़र्मान कहता है, अपनी तरफ़ से फ़ौरन् किसी को काफ़िर नहीं कहता है। उसके बाद इस ज़ईफ़ ने कहा ऐ बादशाह इन मुल्लाओं से पूछो कि बुहतान लगाने वालौं पर शरअन् क्या हद् (धार्मिक दण्ड) लाज़िम आती है, तो मुल्लाओं ने ख़ामूशी इख़तियार की। इस ज़ईफ़ ने कहा कि अल्लाह तआला ने अपने कलामे मजीद में फ़र्माया है कि बुहतान (झूटा आरोप) लगाने वाले को अस्सी कोड़े मारो। बेशक तुम्हारे मुल्लाओं पर हद लाज़िम आती है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है *''जो लोग पाक दामन औरतौं को तोहमत लगाऐं और उस पर चार गवाह न लाऐं तो उन (तोहमत लगाने वालों) को अस्सी (८०) कोड़े मारो और कभी उनकी गवाही क़ुबूल न करो और यही लोग बद किरदार हैं''* (अन-नूर-४)। बादशाह ने कहा ऐ मुल्लायाँ और ऐ शेख़ाँ तुमने शेख़ मुस्तफ़ा पर तुहमत (आरोप) लगाई है इस लिये तुम पर शरई हद लाज़िम आई है। इस ज़ईफ़ ने कहा ऐ बादशाह पैग़म्बर सल्ला० ने फ़र्माया है कि '' अल्लाह रहम करे उस पर ज़िस ने इन्साफ़ किया और लाअनत करे उस पर जिस ने ना-इन्साफ़ी की''।

उसके बाद बादशाह ने सवाल किया कि ऐ शेख़ मुस्तफ़ा यह शेख़ाँ और मुल्लायाँ ज़ाहिद हैं मख़लूक़ की रहबरी करते हैं, फिर तुम ने उनके पीछे क्यों नमाज़ नहीं की? इस ज़ईफ़ ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है'' दुन्या का तालिब ना मर्द है, आख़िरत का तालिब औरत है और ख़ुदा का तालिब मर्द है''। अल्लाह तआला फ़र्माता है *''मर्द हैं कि उनको ग़ाफ़िल नहीं करती और बाज़ नहीं रखती दुन्या की सैदागरी और ख़रीद-व-फ़रोख़्त ख़ुदा तआला के ज़िक्र और नमाज़ अदा करने से''* (अन-नूर-३७। यानि वह तर्के दुन्या किये हैं और अल्लाह के ज़िक्र के सिवाय किसी चीज़ में मश्ग़ूल नहीं होते और क़ुरआन का बयान

सुन्ते हैं और उस पर अमल करते हैं, यही लोग मर्द * हैं और बाक़ी ना मर्द हैं। पस ऐ बादशाह इन्साफ़ *कीजिये अब्दुन-नीब को और मजलिस के* तमाम आलिमौं को कहीये कि हदीस और फ़िक़्ह की किताबौं से ऐक मसअला पेश करो कि ना मर्द इमाम बने और मर्द मुक़तदी रहें। ना मर्दों की इमामत ना जाईज़ होने का मसअला बहुत सी किताबौं में है इसी लिये मैं ने इन ना मर्दों के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी। जब यह जवाब बादशाह ने सुना तो हंस दिया और कहा कि ऐ शेख मुस्तफ़ा तुम ने सच कहा। उसके बाद बादशाह ने आलिमौं और शेख़ौं की तरफ़ रूख़ किया और कहा कि शेख़ मुस्तफ़ा ने तुम्हारे पीछे इस लिये नमाज़ नहीं पढ़ी कि तुम लोग नामर्द हैं और ना मर्दों की इक़तिदा दुरुस्त नहीं। अब तुम सब इसका जवाब दो और ना मर्दों के पीछे नमाज़ दुरूस्त होने पर एक दलील आयते क़ुरआन, हदीसे रसूल सल्ला० और क़ुतुबे मोतबरा से पेश करो। किसी ने जवाब न दिया तमाम मक़हूर हुऐ। फिर बादशाह ने कहा ऐ मियाँ मुस्तफ़ा तुम ने जवाब बा सवाब लाया तुम पर अल्लाह की रहमत हो। उसके बाद इस ज़ईफ़ ने यह बैत पढ़ी

ऐ ना मर्द चले जा यहाँ तेरी रसाई नहीं
इश्क़े हक़ को ना मर्द से काम नहीं

उसके बाद इस ज़ईफ़ ने कहा ऐ बादशाह ऐक दूसरी हिकायत याद आई है अगर सुन्ना चाहो तो कहता हूँ। एक मजलिस में मर्दाने ख़ुदा परस्त बैठे थे । उस मजलिस में ऐक ना मर्द भी बैठा हुआ था। मर्दाने ख़ुदा, ख़ुदा, रसूले ख़ुदा सल्ला० और मक्का मुअज़्ज़मा के बारे में गुफ़तगू कर रहे थे। उनमें से एक ने कहा कि मैं मक्का मुबारका को गया था, उसका सवाब

*नक़ल है हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि मेरी तस्दीक़ की अलामत यह है कि नामर्द मर्द हो जाता है यानि दुन्या का तालिब फिर ख़ुदा की ज़ात का तालिब होजाता है। मर्दे यानि ख़ुदा के तालिबौं पर ना मर्दों यानि दुन्या के तालिबों का हमला करना शेरौं पर कुत्तौं का हमला करना है। (हाशिया शरीफ़)

बहुत और बेशुमार है, दरया और जंगल का तमाशा बहुत देखा। वह ना मर्द जो बैठा हुआ था उसके दिल में भी मक्का जाने की हवस पैदा हुई। पस वह अपने घर आया, तोशा लिया और मक्का के रास्ते पर चला। दो कोस का रास्ता तै किया था कि पाँव और कमर में दर्द शुरू हुआ। रास्ते के दरमियाँन् एक आघ का झाड़ नज़र आया लेकिन उस झाड़ के पास जल्द न पहुंच सका और यह मिसरा पढ़ा।

ऐ आघ के झाड़ तू इस क़दर दूर है तो मक्का कहाँ होगा।

ऐक बार बहुत दूश्वारी और मशक़्क़त के बाद ख़ुद को उस आघ के झाड़ के पास पहुंचाया और औरतौं की तरह आह-ऊह करता हुवा गिर पड़ा और लोटता हुवा क्या देखता है कि ऐक शख़्स दूर के रास्ते से आ रहा है। जब उसके नज़दीक पहुंचा तो उसको पूछा कि ऐ अज़ीज़ यहाँ से मक्का मुअज़्ज़मा कितनी दूर है। उस शख़्स ने कहा तू अपने घर को छोड़कर कितने अरसे से रास्ता तै कर रहा है। उस ना मर्द ने कहा कि आज ही घर से निकला हूँ और मक्का जाने का इरादा किया हूँ। यहाँ से मेरा घर दो कोस के फ़ासले पर है। उस आने वाले शख़्स ने कहा ऐ ना मर्द जा पलट जा, तू कहाँ और मक्का कहाँ, जब तू दर्या को देखेगा तो हलाक हो जायगा। यह कहा और चला गया। उस ना मर्द को राहगीर (यात्री) की बातें सुन्ने से हैबत और दहशत हुवी और बहुत ग़मनाक होकर उठा और घर का रास्ता लिया। जब घर पहुंचा पाँव और कमर में दर्द हो रहा था, बूढ़ी औरतौं की तरह आह-ऊह करता हुआ बिस्तर पर पड़ गया और तौबा किया और कहा कि मक्का का रास्ता तै करना बहुत मुश्किल है। इस तरह वह नामर्द मक्का को नहीं पहुंच सका। घर वालौं ने उसको सरज़निश की कि तू क्यों गया था, हम ने तुझ को नहीं कहा था कि तू मक्का को नहीं पहुंचेगा, यह काम तो मर्दों का है।

जब यह हिकायत पूरी हुवी तो इस ज़ईफ़ ने कहा ऐ बादशाह इस हिकायत के माने ऐसे हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है कि दुन्या का तालिबा ना मर्द है, आख़िस्त का तालिब औरत है और ख़ुदा का तालिब मर्द है। पस जो लोग दुन्या के तालिब और ना मर्द हैं वह लोग रसूलुल्लाह सल्ला० की पैरवी और तर्के दुन्या नहीं करेंगे, इस लिये कि वादशाह के पास जाना, वज़ीफ़ा लेना और बादशाह और उमरा की चापलूसी और तमल्लुक़ (ख़ुशामद) करना उनका काम है। उनसे तवक्कुल और तक़वा कैसे हो सकेगा। जैसा कि वह नामर्द मक्का के रास्ते से वापस हुआ इन तालिबाने दुन्या का हाल भी ऐसा ही है। जब यह हिकायत बादशाह ने सुनी तो पसंद किया और ख़ुश हुवा और कहा ऐ शेख़ मुस्तफ़ा तुझ पर अल्लाह की रहमत हो और अल्लाह तुझे बर्कत दे। उसके बाद बादशाह ने शेख़ौं और आलिमौं की तरफ़ रूख किया और कहा कि मियाँ मुस्तफ़ा ने जो कुछ कहा यह तुम्हारा हाल है जैसा कि तुम ने सुना। किसी ने जवाब नहीं. दिया सर झुका कर ख़ामूश होगये। बादशाह ने कहा किस लिये सर झुका कर ख़ामूश होगये, अपना सर उठाओ और जवाब दो। किसी को जवाब देने की ताक़त न हुई।